मर्यादा-पुरुषोत्तम
बनने के लिए





मर्यादा पुरुषोत्तम



(संकलन)

आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

स्पार्क (SpARC)

(Spiritual Applications Research Centre)

पोस्ट बॉक्स नं.- 66, ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत–307501,
राजस्थान.

ई–मेल – sparcwing@bkivv.org

मर्यादा पुरुषोत्तम

मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिए

बापदादा की श्रीमत, शिक्षाएं, मर्यादाएं तथा धारणाएं

रुहानी सेना सदैव शस्त्रधारी, लॉ एण्ड ऑर्डर में चलने वाली होती है। सेना का मुख्य गुण यही देखा जाता है कि लॉ एण्ड आर्डर कहाँतक है? तो क्या आप सब लॉ एण्ड आर्डर में हो? रुहानी सेना के लिए मुख्य लॉ कौन सा है कि? जिसमें सब लॉ आ जाए? रुहानी सेना के लिए मुख्य लॉ यही है कि कभी भी अपनी देह को व अन्य देहधारी की तरफ नहीं देखना है। बाप की तरफ ही हर कदम उठाना है। यह है रुहानी सेना के लिए मुख्य लॉ। अगर जरा भी देहधारी व अपनी देह को देखा, तो जो मंजिल है कि - बाप तक पहुँचना व बाप से मिलना, तो वहाँ तक पहुँच नहीं सकेंगे।

अव्यक्त बापदादा-३०:०६:७४

1. मायावी लोगों के संग से बचना हैं।

2. बेहद के बाप से अथाह ज्ञान-धन लेने के लिए रोज दो बार ज्ञान-स्नान करना है।

3. पढ़ाई में रेग्युलर बनना है। पढ़ाई के लिए कभी बहाना नहीं देना है।

4. गंदी तृष्णा रखने वालों के संग में कभी नहीं फंसना है।

5. कर्मबन्धन में कभी भी फंसना नहीं है।

6. अलौकिक जन्म से कभी तंग नहीं होना है।

7. कभी भी अशान्त नहीं होना है। बहुत निर्मानचित बनना है। कभी क्रोध नहीं करना है, मीठा रहना है। अशान्ति फैलाने वालों के संग से दूर रहना है। जिनमें गुण हैं, उनके पास जाना है। दत्तात्रेय की तरह सबसे गुण ग्रहण करना है। बहुत बातें नहीं करनी हैं। थोड़ा बोलने से भी सब काम हो सकते हैं, इसलिए तुम शान्त रहो। कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना है, खामी वालों से किनारा कर लेना है।

8. तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है - सारा दिन ज्ञान-मोती चुगते रहना। उठते-बैठते, चलते-फिरते ज्ञान का विचार सागर मंथन करते रहो। बाप का परिचय सबको देते रहो। ज्ञान के सिवाए दूसरी बातें तुम्हें नहीं करनी है। तुम हो मोती चुगने वाले होली हंस। तुम किसी के अवगुण रूपी कंकड़ नहीं उठा सकते। गुणवान बच्चे दूसरों में गुण ही फूंकते रहेंगे।

9. कर्मेन्द्रियों से कोई भी उल्टा कर्म, पाप कर्म नहीं करना है, नाम बदनाम नहीं करना है।

10. किसकी दिल कभी दुखाना नहीं है। मन्सा, वाचा, कर्मणा किसी को दु:ख नहीं देना है।

11. अपना स्वभाव बहुत ही मीठा और शान्त बनाने के लिए बाप की याद में रहना है।

12. अपना स्वभाव बहुत ही मीठा और शान्त बनाओ, बोल-चाल ऐसा हो जो सब कहें यह तो जैसा देवता है। दैवी मैनर्स धारण करने हैं।

13. जैसे बाप को किसी भी बात का अफसोस नहीं होता, भल कोई बच्चा भी बीमार पड़ता, कुछ भी होता, बाप साक्षी होकर देखते हैं, ऐसे तुम बच्चे भी साक्षी बनो। इस पुराने दुनिया से ममत्व मिटा दो। हरेक का कर्मभोग अपना-अपना है। आत्मा ने जो उल्टे कर्म किये हैं, उसकी भोगना उसे भोगना ही है। इसलिए साक्षी होकर देखते रहो।

14. बुद्धि का योग बाप के सिवाए और किसी के संग जोड़ा तो भस्मासुर बन जाऐंगे।

15. कम से कम 8 घण्टे बाप की सर्विस पर रहो, 8 घण्टे बाप को याद करो वा स्वदर्शन चक्र फिराओ।

16. कभी भी देह-अभिमानी बन साकार शरीर में न फंसना है, न किसी को फंसाना है। किसी भी देहधारी से दिल नहीं लगाना है। बाप के सिवाए किसी से भी प्यार न हो।

17. कभी रोना नहीं है।

18. किसी से भी घृणा वा नफरत नहीं करनी है।

19. पावन बनने के लिए हम आत्मा भाई-भाई हैं, फिर ब्रह्मा बाप की सन्तान भाई-बहन है- यह दृष्टि पक्की करना है।

20. बाइस्कोप, टी.वी, वीडियो आदि हेल में जाने का रास्ता है, इसलिए यह नहीं देखने है।

21. कोई भी विकर्म करके झूठ बोलकर अपना नुकसान नहीं करना है।

22. अपने जीवन को हीरे जैसा बनाने के लिए संग की बहुत संभाल चाहिए। संग उनका करना चाहिए जो अच्छा बरसते हैं, जो बरसते नहीं है उनका संग रखने से फायदा ही क्या? संग का दोष बहुत लगता है, कोई किसके संग से हीरे जैसा बन जाते हैं,कोई फिर किसके संग से ठिक्कर बन जाते हैं। जो ज्ञानवान होंगे वह आप समान जरूर बनाऐंगे। कुसंग से अपनी संभाल रखेंगे।

23. ध्यान रहे - कभी मुख से कुवचन न निकले, कुदृष्टि, कुचलन, कुकर्म न हो जाए।

24. किसी भी बात में तुम्हे आरग्यु (वादविवाद) नहीं करना है। डिबेट किससे भी नहीं करना है।

25. देह-अभिमान में आने से बाप की याद के बजाए देहधारी की याद आएगी, कुदृष्टि जाती रहेगी, खराब ख्यालात आयेंगे। यह बहुत बड़ा पाप है। समझना चाहिए-माया वार कर रही है। फौरन सावधान हो जाना चाहिए।

26. कभी भी ऐसी हंसी-मजाक नहीं करनी है जिसमें विकारों की वायु हो। मुख से कटु वचन नहीं निकालने है। रूप-बसंत बन मुख से सदैव रत्न निकालने हैं।

27. कोई भी उल्टी-सुल्टी बात सुनकर संशय में नहीं आना है।

28. तुम्हें बाप जो सुनाते हैं वही सुनो, आसुरी बातें मत सुनो, मत बोलो। हियर नो ईविल.....

29. अपनी चाल-चलन बहुत रॉयल रखनी है। बहुत फजीलत से बातचीत करनी है। नम्रता का गुण धारण करना है। बहुत-बहुत मीठा बनना है।

30. पास विद ऑनर होना है तो बुद्धियोग थोड़ा भी कही न भटके, एक बाप की याद रहे। किसी भी देहधारी से लगाव नहीं रखना है। किसी के नाम, रूप में नहीं लटकना है।

31. कहना कम करना ज्यादा।

32. किसी की कमजोरियों का वर्णन करने के बजाए गुणस्वरूप बनो, गुणों का ही वर्णन करो। ऐसा-वैसा (रफ- टफ) कोई शब्द बोलने के बजाए न बोलना अच्छा है।

33. देवता बनने के लिए खान-पान की पूरी परहेज रखनी है, कोई भी अशुद्ध वस्तु नहीं खानी है।

34. दृढ़ संकल्प करना है कि रात-दिन एक बाबा की याद में रहूँगा और बाबा जो कहेंगे वह अवश्य करूँगा।

35. श्रीमत कहती है - तुम बच्चे अपना पैसा पाप के कामों में नहीं लगा सकते हो। पाप आत्माओं को दान देना - यह भी पाप कराने के निमित्त बनना है।

36. अभी हम धनी बाप के बने हैं, कब आपस में लड़ना-झगड़ना नहीं है।

37. अपनी अवस्था अच्छी बनाने के लिए भोजन का बहुत-बहुत ध्यान रखना है। सेन्सीबुल बच्चे अपने हाथ से योग में रहकर भोजन बनाऐंगे और खाएंगे। अगर कोई बाबा को याद कर, प्रेम से बैठ भोजन बनाए और खाए तो अवस्था बहुत अच्छी हो सकती है। बाबा की याद में भोजन बनाएंगे तो बाबा भी वासना लेंगे। सर्विसेबुल बच्चों को बहुत फुर्त बनना चाहिए। हर प्रकार की सेवा अपने हाथ से करनी है।

38. कभी कोई उल्टा कर्म करके सतगुरू की निंदा नहीं करानी है।

39. कभी भी बाप का डिसरिगार्ड नहीं करना है। माँ-बाप में कभी संशय नहीं लाना है।

40. तुम्हें बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा लेने का शुद्ध लोभ और एक बाप में ही पूरा मोह रखना है। अशुद्ध अहंकार वा अशुद्ध लोभ व मोह आया तो पदभ्रष्ट हो जाएंगे।

41. किसी भी चीज में आसक्ति न हो।

42. एक भी मुरली मिस नहीं करनी है। ज्ञानसागर का सारा ज्ञान हप करना है। मुरली 5-6 बार सुननी वा पढ़नी जरूर है।

43. देहधारियों से प्रीत तोड़ एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी हैं।

44. श्रीमत कहती है - बच्चे, अन्तर्मुखी हो जाओ, बाहर से कुछ भी न बोलो। इस श्रीमत का पालन करेंगे तो सहज वाणी से परे जा सकेंगे। याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है। उस समय उठकर अन्तर्मुखी बन आत्मा रूप में स्थित होकर बैठ जाओ।

45. सवेरे-सवेरे उठकर याद में जरूर बैठना है, इसमें गफलत नहीं करनी है।

46. किसी भी पुरानी आदत के वशीभूत हो उल्टा कर्म नहीं करना है। अकर्तव्य नहीं करना है।

47. व्यर्थ देखने वा व्यर्थ सुनने की नेचर का त्याग करो।

48. बच्चों को मुरली अच्छी तरह 5-6 बार पढ़ना चाहिए तब ही बुद्धि में बैठेगी और खुशी का पारा चढ़ेगा। मुरला किसी भी परिस्थिति मे जरूर पढ़नी है।

49. मात-पिता से, परिवार से, संगठन में, आपस में रूठना नहीं है, आपस में कलह नहीं करनी है।

50. सेवा में अपने साथियों को सदा आगे रखें, खुद पीछे रहें। हमे अपना शो नहीं करना है।

51. सदा हर्षित रहना बहुत अच्छा मैनर है। देवताएं सदा हर्षित रहते हैं, खिल-खिलकर हँसना नहीं है। आवाज़ से हँसना भी एक विकार है। तुम बच्चों को याद की गुप्त खुशी रहनी चाहिए। फैमिलियारिटी का संस्कार बहुत नुकसानकारक है। सर्विस की सफलता के लिए अनासक्त वृत्ति चाहिए। नाम-रूप की बदबू जरा भी न हो।

52. कर्मयोगी बन कर्म भी करना है, साथ-साथ 8 घण्टा स्व के पुरुषार्थ में देना है।

53. आपस में देह-अभिमान की बातें नहीं करनी है, रुहानी बातें ही करनी है।

54. अगर कभी कोई भूल हो जाती है तो बाप से क्षमा माँगनी चाहिए। चढ़ती कला का आधार है- बाप से छिपाओ मत, अगर छिपायेंगे तो छिपाते-छिपाते स्वयं भी छिप जाएंगे।

55. झूठ बोलने की आदत को मिटाना है।

56. तुम्हारा किसी से भी वैर नहीं होना चाहिए, क्योंकि तुम हो सबके कल्याण कारी, वैर रखने वाले को हाफ कास्ट ब्राह्मण कहा जाता है।

57. योग में रह बाप से ताकत लेनी है। कृपा, आशीर्वाद माँगना नहीं है।

58. स्तुति, निन्दा, मान-अपमान में स्थिति समान रखना है। यह सब होते पढ़ाई नहीं छोड़नी है, इसे खेल समझ पार करना है।

59. अपना समय खाने-पीने, झुरमुई-झगमुई में व्यर्थ नहीं गंवाना है।

60. बाप की श्रीमत है - बच्चे, नींद को जीतने वाले बनो। सवेरे का समय बहुत अच्छा होता है। उस समय उठकर मुझ बाप को याद करो तो तुम बख्तावर बन जायेंगे। अगर सवेरे-सवेरे उठते नहीं है तो जिन सोया तिन खोया। सिर्फ सोना और खाना यह तो गंवाना है इसलिए सवेरे उठने की आदत ड़ालो।

61. ज्ञानी तू आत्मा सभी के साथ अति मीठा व्यवहार करेगी। किसी से दोस्ती, किसी से दुश्मनी रखना यह ज्ञानी तू आत्मा का लक्षण नहीं।

62. किसी भी हालत में तुम्हें मुरझाना नहीं है। ब्रह्मा के कोई सपूत बच्चे हैं तो कोई कपूत, कोई सर्विस करते, कोई डिससर्विस। फिर भी बाबा कभी मुरझाते नहीं, घबराते नहीं, फिर तुम बच्चे क्यों मुरझा जाते हो?

63. किसी का भी सामना नहीं करना है। कोई कुछ कहे तो सुना-अनसुना कर देना है। सहनशील बनना है।

64. दिन में शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करो, रात में बैठ ज्ञान का सिमरण करो, बाप को याद करो, बुद्धि में स्वदर्शनचक्र फिराओ तो नशा चढ़ेगा।

65. तुम्हें बाप समान मुरलीधर जरूर बनना है, मुरलीधर बच्चे ही बाप के मददगार है। बाप उन पर ही राजी होता है, जो अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान कर सच्चे फिलेन्थ्रोफिस्ट बनते हैं, होशियार सेल्समेन बन जाते हैं। उनकी बुद्धि बहुत-बहुत निर्माण हो जाती है। सर्विस करते-करते बुद्धि रिफाइन हो जाती है। ज्ञान दान करने में कभी भी अभिमान नहीं आना चाहिए।

66. सदा ज्ञान और योग की मस्ती में रहो, इस पुराने शरीर का चिन्तन नहीं करो। जितना शरीर में बुद्धि जाएगी लोभ रखेंगे उतना और ही बीमारियाँ आती जाएगी। इस शरीर को श्रृंगारना, पाउडर, क्रीम आदि लगाना- यह सब फालतू श्रृंगार है, तुम्हें अपने को ज्ञान-योग से सजाना है। यही तुम्हारा सच्चा-सच्चा श्रृंगार है।

67. जब तक विकर्मों का बोझ है तब तक ज्ञान की धारणा नहीं हो सकती। कर्म ऐसे किए हुए है जो बार-बार विघ्न डालते है, आगे बढ़ने नहीं देते

है। इस बोझ से हल्का होने के लिए नींद को जीतने वाले निद्राजीत बनो। रात को जागकर बाबा को याद करो तो बोझ हलका हो जाएगा।

68. पिताव्रता वह है जो बाप की श्रीमत पर पूरा चलते है, अशरीरी बनने का अभ्यास करते हैं, अव्यभिचारी याद में रहते हैं, ऐसे सपूत बच्चे ही हर बात की धारणा कर सकेंगे। उनके ख्यालात सर्विस के प्रति सदा चलते रहेंगे। उनका बुद्धि रूपी बर्तन पवित्र होता जाता है। वह कभी भी फारकती नहीं दे सकते हैं।

69. कभी भी कोई गलती हो तो सच बोलना है, सच बोलने से ही उन्नति होगी। तुम्हें अपनी सेवा दूसरों से नहीं लेनी है। अगर यहां सेवा लेंगे तो वहाँ करनी पड़ेगी। तुम स्टूडेन्ट अच्छी तरह से पढ़कर दूसरों को पढ़ाओ तो बाप भी खुश होगा। बाप प्यार का सागर है, उनका प्यार ही यह है जो तुम बच्चों को ऊंच मर्तबा दिलाते हैं।

70. योग में रहकर भोजन बनाना है, योग में ही रहकर भोजन खाना और खिलाना है।

71. किसी का भी जीवन बनाना यह बहुत अच्छा पुरुषार्थ है। बच्चों को इसी पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए। कभी अगर कोई भूल हो जाती है तो उसके बदले में खूब सर्विस करो, नहीं तो वह भूल दिल को खाती रहेगी। बाप को ज्ञानी और योगी बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं जो सदा योग में ही बिजी रहते हैं।

72. मुरली चलाने का हौसला रखना है। अपनी चलन से बाप का शो करना है। बातचीत बड़े मिठास से करनी है।

73. इस दुनिया में अपना बाहरी शो नहीं करना है। सम्पूर्ण पास होने के लिए गुप्त पुरुषार्थ करते रहना है।

74. अपना स्वभाव बहुत मीठा, शान्तचित बनाना है। बहुत कम और रॉयल्टी से बात करनी है।

75. कोई भी छी-छी, गन्दी तृष्णा, तमन्ना वा आश नहीं रखनी है।

76. जो बीता उसे याद नहीं करना है, बीती को बीती कर सदैव हर्षित रहना है।

77. बहुत प्यार और धीरज से सबको ज्ञान की बातें सुनानी है।

78. उत्तम पुरुषार्थी बनना है तो पढ़ाई से कभी रूठना नहीं। पढ़ाई से लड़ने-झगड़ने का तैलुक नही। पढ़ेंगेऽ लिखेंगे होंगे नवाब ...इसलिए सदा अपनी उन्नति का ख्याल रहे। चलन पर बहुत अटेन्शन चाहिए। देवताओं जैसा बनना है तो चलन बड़ी रॉयल चाहिए। बहुत - बहुत मीठा बनना है। मुख से ऐसे बोल निकलें जो सबको मीठे लगे। किसी को दु:ख न हो।

79. बाप के शरण में वही आ सकते हैं जो पूरा-पूरा नष्टोमोहा हो, जिनका बुद्धियोग सब तरफ से हटा हुआ हो, मित्र-सम्बन्धियों आदि में बुद्धि का लगाव न हो, पक्की सगाई एक बाप के साथ हो, बुद्धि में रहे - मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई - ऐसे बच्चे ही सर्विस कर सकते हैं। बाप भी ऐसे बच्चों को ही शरण देते हैं।

80. क्रोध में आकर अपने हाथ में लॉ नहीं उठाना है।

81. किसी भी सेवा के लिए ना नहीं करना है।

82. किसी के डर से पढ़ाई कभी नहीं छोड़ना है।

83. अपने को आत्मा समझ, आत्मा भाई से बात करो, ऐसी दृष्टि पक्की करो तो भूत प्रवेश नहीं करेंगे। जब कोई में भूत देखो तो उससे किनारा कर लो। कोई भी बात ईश्वरीय कायदे के खिलाफ नहीं करनी है। किसी में अगर भूत की प्रवेशता है या दृष्टि खराब है तो उसके सामने से हट जाना है, उनसे जास्ती बात नहीं करनी है।

84. विकर्म विनाश करने वा आयु को बढ़ाने लिए याद की यात्रा में जरूर रहना है। याद से ही पावन बनेंगे। इसलिए कम से कम 8 घण्टे याद का चार्ट बनाना है।

85. देह-अभिमान में आकर एक-दो को तंग नहीं करना है, हर बात में राजी रहना है। कभी भी चुगली नहीं लगानी है, हसद (ईर्ष्या) रीस नहीं करनी है।

86. जो बच्चे वफादार, सर्विसएबुल और बहुत मीठे हैं, कभी किसी को दु:ख नहीं देते हैं, ऐसे बच्चों को बाप की पुचकार मिलती है। जब तुम बच्चों का आपस में बहुत-बहुत लव रहे, कभी भी भूलें न हो, मुख से दु:ख देने वाले बोल न निकलें, सदा भाई-भाई का रुहानी प्यार रहे तब बाप का शो कर सकेंगे।

87. संसार-समाचार सुनने की आदत नहीं रखनी है। अपना समय दुनियावी बातों में बरबाद मत करो।

88. यहाँ तुम वनवाह में हो, अच्छा पहनावा, अच्छा खाना, किसी भी प्रकार का शौक नहीं रखना है। पढ़ाई और कैरेक्टर पर पूरा-पूरा ध्यान देना है। अन्तर्मुखी बन अपने आपको सुधारना है।

89. मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्र रहना है। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म न हो, इसकी संभाल करनी है। संग के रंग में आकर कोई भी पाप कर्म नहीं करना है।

90. इस शरीर से जीते जी मरने का अभ्यास करो- मैं भी आत्मा, तुम भी आत्मा, इस अभ्यास से ममत्व निकल जाएगा। सभी देहधारियों से ममत्व टूट जाए, सदा भाई-भाई की स्मृति रहे- यही है ऊँची मंजिल। इस मंजिल पर वही पहुँच सकते हैं जो निरंतर देही अभिमानी बनने का अभ्यास करते हैं। अगर देही अभिमानी नहीं तो कहीं न कहीं फंसते रहेंगे या अपने शरीर में या किसी न किसी मित्र सम्बन्धी के शरीर में। उन्हें कोई की बात अच्छी लगेगी या कोई का शरीर अच्छा लगेगा। ऊंची मंजिल पर पहुंचने वाले जिस्म से प्यार नहीं कर सकते। उनका शरीर का भान टूटा हुआ होगा।

91. कभी भी किसी के शरीर पर तुम्हें आशिक नहीं होना हैं, विनाशी शरीर से दिल नहीं लगानी है। मोहजीत बनना है, प्रतिज्ञा करो कि कोई भी शरीर छोड़े, हम रोयेंगे नहीं।

92. शरीर निर्वाह अर्थ कर्म जरूर करो, लेकिन टू मच झंझटों में नहीं फंसना है। धन्धे का चिन्तन टू मच न हो जो बाप की याद ही भूल जाए।

93. इस ज्ञान मार्ग में तीव्र जाना है तो और सब विचार छोड़ बाप की याद में लग जाओ जिससे विकर्म विनाश हो जाए और पूरा किचड़ा निकल जाए। याद की यात्रा ही ऊंच पद का आधार है। इसी से तुम कौड़ी से हीरा बन सकते हो।

94. साक्षात्कार की आश नहीं रखनी है, साक्षात्कार से फायदा नहीं है। जंक निकलेगी बाप और नॉलेज को याद करने से।

95. हम देवता बन रहे हैं इसलिए खान-पान पर बहुत ध्यान देना है। अपनी जबान पर बहुत कन्ट्रोल रखना है। जबान चलायमान नहीं होनी चाहिए।

96. रुहानी पढ़ाई मे सदा बिजी रहना है। कभी भी नॉवेल्स आदि पढ़ने की गंदी आदत नहीं ड़ालनी है, अब तक जो कुछ पढ़ा है वह सब भूल जाओ, एकदम बचपन में चले जाओ, तब इस रुहानी पढ़ाई में पास हो सकेंगे।

97. अपने को आत्मा भाई-भाई समझ एक-दो से रुहानी प्रेम रखो, सतोप्रधान बनना है तो किसी की खामी नहीं निकालो। किसी की नुक्श नहीं निकालो, करेक्शन नहीं करो, एक बाप के सिवाए और सब बातें भूलते जाओ। फलाना ऐसा करता... वह ऐसा है ....इन बातों में टाइम वेस्ट मत करो। बाप के लव में चटके रहो।

98. किसी की व्यर्थ बातें, परचिन्तन की बातें न सुननी है, न ग्लानी करनी है।

99. दो के बीच में कभी बोलना नहीं है, किसी को भी बिन मांगी आवश्यक राय-सलाह नहीं देनी है।

100. एक बाप जो सुनाते है व पढ़ाते है वही सुनो व पढ़ो, बाकी कुछ भी पढ़ने, सुनने की दरकार नहीं, संग की बहुत-बहुत संभाल रखो। सवेरे-सवेरे एकान्त में बैठ विचार सागर मंथन करो।

101. सर्व का प्यार वा आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भरकर दान करना है।

102. उन्नति का आधार है लव, एक बाप से सच्चा प्यार चाहिए। नज़दीक रहते भी यदि उन्नति नहीं होती तो जरूर लव की कमी है। लव हो तो बाप को याद करें। याद करने से सब शिक्षाओं को धारण कर सकते हैं। उन्नति के लिए अपना सच्चा-सच्चा चार्ट लिखो। बाबा से कोई भी बात छिपाओ नहीं। आत्म-अभिमानी बनते खुद को सुधारते रहो। बहुत बोलना नहीं है। बहुत बातचीत में नहीं आना है।

103. अन्तिम पेपर में पास होने के लिए बाप के सिवाए पुरानी दुनिया की कोई भी चीज़ याद न आए, किसी भी चीज में आसक्ति नहीं रखनी है। सम्बन्धों से ममत्व निकल जाए। भाई-भाई की पक्की दृष्टि व स्थिति हो। देह-अभिमान टूटा हुआ हो।

104. तुम रॉयल कुल के रॉयल स्टूडेन्ट हो, तुम्हारी चलन बहुत रॉयल होनी चाहिए, तब ही बाप का शो कर सकेंगे।

105. सदा आज्ञाकारी रहने का पुरुषार्थ करो। संगम पर फरमानवरदार का टीका दो तो राजाई का तिलक मिलेगा। बेवफादार अर्थात आज्ञा को न मानने वाले राजाई का तिलक नहीं प्राप्त कर सकते। कोई भी बीमारी

सर्जन से छिपाओ नहीं, छिपायेंगे तो पद कम हो जाएगा। बाप जैसा प्यार का सागर बनो।

106. क्रोध में आकर मुख से बम नहीं निकालना है, चुप रहना है।

107. ऊंची मंजिल पर पहुंचने के लिए आंखों की संभाल करो। यह बहुत धोखेबाज हैं। क्रिमिनल आंखें बहुत नुकसान करती हैं इसलिए जितना हो सके अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, भगवान का हुक्म है- मीठे बच्चे, काम महाशत्रु से खबरदार रहो।

108. सर्विस करने का शौक रखो, तो मोह की रगें टूट जाएंगी। सदा बुद्धि में याद रहे कि इन आंखों से जो कुछ देखते हैं यह सब विनाशी है। इसे देखते हुए भी नहीं देखना है। आत्मा जो विचित्र है उसे ही देखने का पुरुषार्थ करना है। आत्मा भाई अकाल तख्त पर विराजमान है, इसलिए भ्रकुटि मे ही देखकर बात करनी है।

109. एक बाप को साथी बनाकर तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से खाऊं.....यह अनुभव करना है।

110. पास विद् ऑनर होने के लिए ....कर्म से अतीत बनो। जब जब किसी से बात करते हो तो आत्मा भाई समझ भाई को देखो। भाई-भाई की दृष्टि से वह स्नेह और सम्बन्ध पक्का हो जाएगा। ऊँच पद पाने वाले बच्चे यह पुरुषार्थ अवश्य करेंगे।

111. लायक ब्राह्मण वह जिसके मुख पर बाबा का गीता- ज्ञान कण्ठ हो, जो बहुतों को आप समान बनाता रहे, बहुतों को ज्ञान धन का दान-पुण्य करें, कभी आपस में एक-दो के मतभेद में न आए, किसी भी देहधारी

में बुद्धि लटकी हुई न हो, ब्राह्मण अर्थात् जिसमें कोई भूत न हो, जो अहंकार को छोड़ देही-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करे।

112. एकान्त वासी व आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टीस करते हैं उनकी निशानी - मुख से कभी उल्टा-सुल्टा बोल नहीं निकलेगा। भाई-भाई का आपस में बहुत लव होगा। सदा क्षीरखण्ड होकर रहेंगे। धारणा बहुत अच्छी होगी, उनसे कोई विकर्म नहीं होगा, उनकी दृष्टि बहुत मीठी होगी, कभी देह-अभिमान नहीं आयेगा, कोई को भी दु:ख नहीं देंगे।

113. बुद्धियोग एक बाप से लगाओ, फलाना ऐसा है, यह ऐसा करता है, इसमें यह अवगुण है - इन बातों में जाने की दरकार नहीं। अवगुण देखने से मुँह मोड़ लो। कभी भी पढ़ाई से रूठना नहीं है। मुरली में जो अच्छी-अच्छी प्वाइन्टस हैं उन्हें धारण करते रहो।

114. तुम्हारी सब रगें टूट जानी चाहिए क्योंकि अब घर चलना है, कोई ऐसा विकर्म न हो, जो ब्राह्मण कुल का नाम बदनाम हो।

115. जो बच्चे बहुतों को सुखदायी बनाते, सर्विसएबुल हैं उन्हें देख-देख बाप हर्षित होते हैं। जिन बच्चों की बुद्धि में रहता कि एक बाबा से ही बोलूँ, बाबा से बात करूं, जो बाप की राय को फौरन मान लेते हैं.....ऐसे बच्चे बाप की आंखों में समाए रहते हैं। बाबा कहते...मेरी सर्विस करने वाले बच्चे मुझे अति प्रिय हैं। ऐसे बच्चों को मैं याद करता हूँ।

116. मीठे बच्चे, कभी भी आपस में संसारी झुरमुई-झगमुई की बाते नहीं करो। कोई सुनाता है तो सुनी-अनसुनी कर दो। अच्छे बच्चे अपने

सर्विस की ड्यूटी पूरी कर बाबा की याद में मस्त रहते हैं। परन्तु कई बच्चे फालतू व्यर्थ बातें बहुत खुशी से सुनते और सुनाते हैं, इसमें बहुत समय बरबाद जाता है, फिर उन्नति नहीं होती।

117. दैवी गुणों की सब्जेक्ट पर जिन बच्चों का ध्यान है उनकी बुद्धि में रहता....जैसे कर्म हम करेंगे हमको देख दूसरे करेंगे। कभी किसको तंग नहीं करेंगे। उनके मुख से कभी उल्टा-सुल्टा शब्द नहीं निकलेगा। मन्सा- वाचा-कर्मणा किसी को दु:ख नहीं देंगे। बाप के समान सुख देने का लक्ष्य है तब कहेंगे दैवी गुणों की सब्जेक्ट पर ध्यान है।

118. बाप का डायरेक्शन है...बच्चे, बीती को चितवो नहीं, उल्टी-सुल्टी कोई भी बात न सुनो, न सुनाओ, जो बात बीत गई उसका न तो विचार करो और न रिपीट करो।

119. इस पढ़ाई में सबसे ऊंची सब्जेक्ट है.....भाई-भाई की दृष्टि पक्की करना। बाप ने जो ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है उस नेत्र से आत्मा भाई-भाई को देखो। जरा भी आंखे धोखा न दे। किसी भी देहधारी के नाम, रूप में बुद्धि न जाए। बुद्धि में जरा भी विकारी छी-छी संकल्प न चलें.... यह है मेहनत। इस सब्जेक्ट में पास होने वाले विश्व के मालिक बन जाएंगे।

120. महिमा योग्य बनने के लिए.....बहुत-बहुत निर्माणचित बनो। किसी भी बात का अहंकार नहीं होना चाहिए। बहुत मीठा बनना है।

121. कर्म बन्धन से मुक्त होने की युक्ति... याद की यात्रा तथा ज्ञान का सिमरण। एक बाप के साथ सर्व सम्बन्ध रहें, अन्य कोई में भी बुद्धि न

जाए। जो सर्वशक्तिवान बैटरी है, उस बैटरी से योग लगा हुआ हो। अपने ऊपर पूरा ध्यान हो, दैवीगुण के पंख लगे हुए हों तो कर्मबन्धन से मुक्त होते जाएंगे।

122. देह-अभिमानी बनने से नाम-रूप की बीमारी उत्पन्न होती है। यह बीमारी ही विकारी बना देती है। इसलिए बाप कहते हैं... आत्म-अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करो। इस शरीर से तुम्हारा लगाव नहीं होना चाहिए। देह व देहधारी के लगाव को छोड़ एक बाप को याद करो तो पावन बन जाऐंगे। नाम-रूप की बीमारी कड़ी बीमारी है। अन्तर्मुख बन इस बीमारी को जांच करो और इससे मुक्त बनो। इससे मुक्त बनने के लिए एक बाप से सच्चा-सच्चा लव रखो। याद के समय बुद्धि भटकती है, देहधारी में जाती है तो बाप को सच-सच सुनाओ। सच बताने से बाप क्षमा कर देंगे। सर्जन से बीमारी को छिपाओ नहीं। बाबा को सुनाने से खबरदार हो जाएंगे। बुद्धि किसी के नाम-रूप में लटकी हुई है तो बाप से बुद्धियोग जुट नहीं सकता। वह सर्विस के बजाए डिससर्विस करते हैं। बाप की निंदा कराते हैं। ऐसे निंदक बहुत कड़ी सजा के भागी बनते हैं।

123. सच्चा प्यार एक बाप से रखना है, बाकी सबसे अनासक्त, नाम मात्र प्यार हो।

124. इन आँखों से देखने वाली कोई भी चीज़ सामने न आए। देखते भी न देखो। देह में रहते देही-अभिमानी रहो। बुद्धि में सिवाए बाप और घर

के कोई वस्तु याद न आएं इसके लिए अन्तर्मुख हो अपनी कमियों को जांच कर निकालना है।

125. तुम्हें किसी से मांगना नहीं है, मांगने से मरना भला। आपे ही सब कुछ आएगा। तुम बाहर वालों की तरह चन्दा इकट्ठा नहीं कर सकते। मांगने से सेन्टर जोर नहीं भरेगा। इसलिए बिगर मांगे सेन्टर को जमाओ। चाहना चुहरी (जमादार) है, इसलिए किसी भी प्रकार की चाहना नहीं रखनी है। आसक्ति खत्म कर देनी है। बाबा जो खिलाए .....तुम्हें डायरेक्शन है .... मांगने से मरना भला।

126. बच्चे, अपना सच्चा-सच्चा चार्ट रखो। चार्ट रखने से ही कैरेक्टर सुधरेंगे। देखना है कि सारे दिन में हमारा कैरेक्टर कैसा रहा? किसी को दु:ख तो नहीं दिया? फालतू बातें तो नहीं की, आत्मा समझकर बाप को कितना समय याद किया? कितनों को आप समान बनाया? ऐसा जो पोतामेल रखते उनका केरेक्टर सुधरता जाता है।

127. स्वयं को गरीब से साहूकार बनाने के लिए बाप से अविनाशी ज्ञान रत्न लेने हैं, यह एक-एक रत्न लाखों रुपयों का है, पढ़ाई पढ़नी है। यह पढ़ाई ही सोर्स ऑफ इन्कम है, इसी से ऊँच पद पाना हैं इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं।

128. सबसे बड़ा आसुरी अवगुण है किसी से रफ-टफ बात करना या कटुवचन बोलना। इसे ही भूत कहा जाता है। जब कोई में यह भूत प्रवेश करते हैं तो बहुत नुकसान कर देते हैं इसलिए उनसे किनारा कर

लेना चाहिए। शान्ति में रहने का अभ्यास करो। कोई उल्टा-सुल्टा बोलते हैं तो तुम जवाब न दो। तुम्हें शान्त रहना हैं फालतू झरमुई-झगमुई की बातें नहीं करनी है। मुख में शान्ति का मुलहरा डाल दो।

129. सबसे ऊंची मंजिल है -....सम्पूर्ण सिविलाइज्ड बनना। कर्मेन्द्रियों में जरा भी चलायमानी न आए, जब ऐसी अवस्था हो तब विश्व की बादशाही मिल सकती है। इसलिए फायदा, नुकसान और इज़्जत को ध्यान में रखते हुए क्रिमिनल आई को खत्म कर देना है।

130. कभी भी सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करके अपनी स्थिति खराब नहीं करनी है। झूठी बातें सुनकर अन्दर में जलना नहीं है।

131. कभी भी सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करके अपनी स्थिति खराब नहीं करनी है। झूठी बातें सुनकर अन्दर में जलना नहीं है।

132. अगर सूक्ष्म मे हबच (लालच) का विकार है, हबच के कारण कोई भी चीज़ अपने पास जमा करके रख दी तो वही अन्त में मुसीबत के रूप में याद आती है। इसलिए बाबा कहते..बच्चे.अपने पास कुछ भी न रखो।

133. शरीर को तन्दुरुस्त रखने के लिए घूमने-फिरने जाते हो तो आपस में झरमुई-झगमुई परचिन्तन नहीं करना है। बाप की याद में रह पैदल करना है।

134. जिन बच्चों का प्यार एक बाप से है वे पूरा नष्टोमोहा होंगे। उनकी बुद्धि झूठ खण्ड के झूठे मनुष्यों से हट जाती है। जिन्हें बेहद के बाप का प्यार पसन्द आ गया, वह और किसी के प्यार में फंस नहीं सकते। बाप की

नज़र उन्हें निहाल कर देगी। बाबा तुम्हें अभी ऐसा प्यार देते हैं जो अविनाशी बन जाता है, सतयुग में भी तुम आपस में बहुत प्यार से रहते हो।

135. मीठे बच्चे, तुम मुझे याद करो तो मैं गैरन्टी करता हूँ कि बिगर सजा खाए तुम मेरे घर में चलेंगे। तुम एक बाप से दिल लगाओ, इस पुरानी दुनिया को देखते भी नहीं देखो, इस दुनिया में रहते पवित्र बनकर दिखाओ। इस पुरानी दुनिया को देखते भी नहीं देखो। तो बाबा तुम्हें विश्व की बादशाही अवश्य देंगे।

136. अहंकार में कभी नहीं आना है। कभी शिक्षा मिलने पर फंक नहीं होना है। बाबा ने ऐसे क्यों कहा? हमारी इज़्जत गई। अरे, इज़्जत तो रावण राज्य में चट हो गई है। देह-अभिमान में आने से अपना ही नुकसान कर देते हैं।

137. अपनी खामियों को निकालने के लिए अपने कैरेक्टर्स का रजिस्टर रखो। उसमें रोज़ का पोतामेल नोट करो। रजिस्टर रखने से अपनी कमियों का मालूम पड़ेगा। फिर सहज ही उन्हें निकाल सकेंगे। खामियों को निकालते उस अवस्था तक पहुंचना है जो एक बाप के सिवाए दूसरा कुछ भी याद न रहे। किसी भी पुरानी चीज़ में ममत्व न रहे। अन्दर कुछ भी मांगने की तमन्ना न रहे। कोई भी छी-छी चीज़ में आसक्ति न जाए।

138. काल सिर पर खड़ा है इसलिए शुभ कार्य में देरी नहीं करनी है। कल पर नहीं छोड़ना।

139. बाप की आज्ञा है....मीठे बच्चे, तुम्हें कोई से भी खिट-खिट नहीं करनी है। शान्ति में रहना है। अगर कोई को तुम्हारी बात अच्छी नहीं लगती तो तुम चुप रहो। एक दो को तंग नहीं करो। बापदादा के दिलतख्त नशीन तब बन सकते जब अन्दर कोई भी भूत न रहे, मुख से कभी कोई कडुवे बोल न निकलें। मीठा बोलना जीवन की धारणा हो जाए।

140. स्कॉलरशिप लेने के लिए सब चीज़ों से ममत्व निकाल दो। धन, बच्चे, घर आदि कुछ भी याद न आए। शिव बाबा ही याद हो। पूरा स्वाहा करो तब ऊंच पद की प्राप्ति होगी। अपना कुछ नहीं। जैसा लक्ष्य है, वैसा शुभ बोल हो ऐसा पुरुषार्थ करना है।

141. बाप से पवित्रता की प्रतिज्ञा की है तो अपने को माया के वार से बचाते रहना है, कभी माया का गुलाम, माया का मुरीद नहीं बनना है। ऐसा तृप्त और विशाल बुद्धि बनना है जो किसी में भी आंख न डूबे।

142. विनाशी शरीरों में मोह रखना अन-राइटियस, नकली प्यार है। जो विनाशी चीज़ों में मोह रखते है, वह रोते हैं। विनाशी शरीरों से प्यार न करके अविनाशी बाप से प्यार करो तो रोने से छूट जाएंगे।

143. सदा हल्के रहने के लिए इस जन्म में जो-जो पाप हुए हैं वह सब अविनाशी सर्जन के आगे रखो।

144. जिनकी मन्सा में क्रिमिनल ख्यालात नहीं रहते, पूरी सिविल आइ हो वही अष्ट रत्न बनते हैं अर्थात् कर्मातीत अवस्था को पाते हैं। अष्ट

रत्न बनने वाले दूरांदेशी बुद्धि होने कारण भाई-भाई की स्मृति में निरन्तर रहते हैं।

145. हरेक की अवस्था और योग में रात-दिन का फर्क है इसलिए अलग-अलग होकर बैठना है, अंग अंग से न लगे।

146. ऑनेस्ट फूल वह है जो कभी भी माया के वश नहीं होते हैं। माया की खिटपिट में नहीं आते है। ऐसे ऑनेस्ट फूल लास्ट में आते भी फास्ट जाने का पुरुषार्थ करते हैं। वह पुरानों से भी आगे जाने का लक्ष्य रखते हैं। अपने अवगुणों को निकालने के पुरुषार्थ में रहते हैं। दूसरों के अवगुणों को नहीं देखते।

147. सदा श्रीमत पर चलना....यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। पूरा पुरुषार्थ वही कर सकते जिनका अटेन्शन वा बुद्धियोग एक बाप में है। सबसे ऊँचा पुरुषार्थ है बाप के ऊपर पूरा-पूरा कुर्बान जाना। कुर्बान जाने वाले बच्चे बाप को बहुत प्रिय लगते हैं।

148. क्रोध बहुत खराब है, यह स्वयं को जलाता है, क्रोध के वश होकर अवज्ञा नहीं करनी है।

149. जिन बच्चों की बुद्धि मे ज्ञान की धाारणा है शुरूड बुद्धि है, उन्हें दूसरों को ज्ञान सुनाने का शौक होगा। उनकी बुद्धि मित्र-सम्बन्धियों आदि में भटकेगी नहीं। शुरूड बुद्धि जो होते हैं वह पढ़ाई में कभी उबासी आदि नहीं लेंगे। स्कूल में कभी आँखें बन्द करके नहीं बैठेंगे। जो बच्चे तवाई होकर बैठते, जिसकी बुद्धि इधर- उधर भटकती रहती, वह ज्ञान को समझते ही नहीं।

150. बाप जो ज्ञान का खज़ाना दे रहे हैं, उसको लेने के लिए दौड़-दौड़ कर आना है। इसमें किसी भी प्रकार का बहाना नहीं देना है। बाप की याद में 10 मील भी पैदल चलने से थकावट नहीं होगी।

151. अगर गन्दे चित्र देखने की गन्दे समाचार पढ़ने की आदत पड़ी तो बाप की याद रह नहीं सकती। सिनेमा है दोजख का द्वार जो वृत्तियों को खराब कर देता है।

152. श्रीमत ही है जिसमें मात-पिता, टीचर, गुरू सबकी मत इकट्ठी है। श्रीमत जैसे सेक्रीन है जिसमें सब रस भरे हुए हैं।

153. फैमिलियरिटी का हल्का नशा भी नहीं रखना है, फैमिलियरिटी की माया के कारण सर्विस में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

154. भले कोई निंदा करे, हमें गुस्से में नहीं आना है, किसी से भी वाद-विवाद नहीं करना है।

155. जिन्हें मेरा एक शिव बाबा दूसरा न कोई.....यह पाठ पक्का नहीं है उन्हें माया खींच लेती है। बाप का बनकर भी शूद्रों को याद करते तो माया अपनी तरफ खींच लेती है। जब शिव बाबा तुम्हें 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। तुम नई दुनिया का मालिक बन रहे हो तो फिर दूसरों की याद क्यों आनी चाहिए?

156. याद की यात्रा पर रहने वाले बच्चों की निशानी–

- वह बहुत गंभीर और समझदार होंगे, सदा शान्त-चित्त रहेंगे।
- उनमें अशुद्ध अहंकार नहीं होगा।

- उन्हें एक बाप की याद की सिवाए और कोई भी बात अच्छी नही लगेगी।
- वह बहुत कम और धीरे बोलेंगे। वह हर काम इशारे से करेंगे। जोर से बोलेंगे वा हंसेंगे नहीं।
- उनकी चलन बहुत-बहुत रॉयल होगी।
- उन्हें मैं ईश्वरीय सन्तान हूँ- - यह नशा होगा।
- आपस में बहुत प्यार से रहेंगे। कभी भी लूनपानी नहीं होंगे।
- उनकी वाचा बहुत फर्स्ट क्लास होगी।

157. किसी को भी उल्टी मत देकर धूतीपना नहीं करना है।

158. पढ़ाई छोड़ने का मुख्य कारण है ....नाम रूप की बीमारी। जब किसी देहधारी के नाम रूप मे फंसते हैं तो पढ़ाई में दिल नहीं लगती। माया इसी बात से हरा देती है। यह बहुत बड़ा विघ्न है।

159. बाप समान दु:खहर्ता सुखकर्ता बनो। किसी को भी दु:ख देने की बातें छोड़ दो। कोई भी विकर्म न करो, अच्छे मैनर्स धारण करो। अपना टाइम बाप की याद में सफल करो तो बाप के दिलतख्तनशीन बन रुद्र माला में पिरोये जाऐंगे अगर कोई अपना टाइम वेस्ट करता है तो मुफ्त में अपना ही पद भ्रष्ट करलेते हैं। झूठ बोलना, भूल करके छिपाना, किसी की दिल को दुखाना- - यह सब पाप है।

160. जिनका अभी तक आसुरी स्वभाव है, आपस में मतभेद के कारण बात नहीं करते हैं जो अभी तक भी जंगली कांटे हैं। ऐसे बच्चे ब्रह्माकुमार-

कुमारी कहला नहीं सकते। ब्रह्माकुमार-कुमारी का स्वभाव अति मीठा होना चाहिए।

161. बाप से बुद्धियोग न लगने का मुख्य एक कारण है.....लोभ। कोई भी विनाशी चीज़ों मे लोभ होगा, खाने का वा पहनने का शौक होगा तो उनकी बुद्धि बाप से नहीं लग सकती। इसलिए बाबा विधि बताते हैं बच्चे लोभ रखो.....बेहद के बाप से वर्सा लेने का। बाकी किसी भी चीज़ में लोभ नहीं रखो। नहीं तो जिस चीज़ से अधिक प्यार होगा वही चीज़ अन्त में भी याद आएगी और पदभ्रष्ट हो जाएगा। लोभ के वश कोई भी चीज़ छिपाकर अपने पास नहीं रखनी है। शिव बाबा के भंडारे से सब कुछ लो तो बाबा की याद रहेगी। अन्नदोष से बहुत संभाल करनी है।

162. ब्राह्मण बनने के बाद वैल्युबल जीवन बनाने का आधार है.....वाचा और कर्मणा सेवा। जो वाचा और कर्मणा सेवा नहीं करते हैं उनके जीवन की कोई वैल्यु नहीं। सेवा से सब की आशीर्वाद मिलती है। जो आधा घण्टा भी ईश्वरीय सेवा नहीं करते वह अपना टाइम, एनर्जी सब वेस्ट करते हैं। उनका पद खत्म हो जाता है।

163. जिन बच्चों का बुद्धियोग पुराने सम्बन्धियों में भटकता है, पूरा ज्ञान नहीं है या कोई पुरानी आदत है। ऐसे बच्चों को माया अपनी ओर घसीट लेती है। बाहर का संग भी बहुत खराब है जो खत्म कर देता है। संग का असर बहुत जल्दी लगता है। इसलिए बाबा कहते....बच्चे, एक बाप के संग बुद्धियोग रखो। बाप को ही फॉलो करो। देहधारियों से

बुद्धियोग मत रखो। कोई, कितना भी प्यारा हो, उसमें प्यार मत रखो। प्यार एक बाप में ही रखो तो ऊंच पद मिलेगा।

164. कोई कितना भी गुणवान हो, मीठा हो, धनवान हो तुम्हें उसकी तरफ आकर्षित नहीं होना है, जिस्म को याद नहीं करना है। एक-दूसरे की देह पर आशिक-माशुक बनना यह देहभान का योग है।

165. कोई भी चीज़ लोभ के वश अपने पास एक्स्ट्रा नहीं रखनी है। एक्स्ट्रा रखेंगे तो उसमें रग जाएगी। बाप की याद भूल जाएगी।

166. ईश्वरीय नशे में रहने वाले बच्चों की चलन बड़ी रॉयल होगी। मुख से बहुत कम बोलेंगे। फालतू बातें नहीं करेंगे। मुख से सदैव रत्न ही निकालेंगे। वैसे भी रॉयल मनुष्य बहुत थोड़ा बोलते हैं। तुम तो ईश्वरीय सन्तान हो, तुम्हें रॉयल्टी में रहना है।

167. ज्ञान की धारणा न होने का मुख्य कारण है बुद्धियोग जरूर कहीं भटकता है। एक के साथ पूरा योग नहीं है। देही-अभिमानी नहीं बने हैं, इसलिए धारणा नहीं होती। बाबा कहते...बच्चे, फैमिलियरिटी में नहीं आओ। एक-दो के नाम-रूप को मत याद करो। एक बाप दूसरा न कोई...यह पाठ पक्का कर लो। दूसरों के पिछाड़ी न पड़ो।

168. कई बच्चे मुरली सुनने वा पढ़ने में सुस्ती करते हैं। मुरली मिस कर देते है। बाबा कहते....बच्चे इसमें सुस्त मत बनो। तुम्हें एक भी मुरली मिस नहीं करनी है।

169. इधर-उधर बैठ कर फालतू बातों में अपना टाइम वेस्ट मत करो, बाप की याद में रहो तो टाइम आबाद हो जाएगा।

170. बाबा कहते....बच्चे मन्सा में भी कोई विकार न रहें। जैसे काम महाशत्रु है वैसे क्रोध भी कम नहीं है। कई बच्चे क्रोध के वशीभूत हो बहुत हंगामा मचाते हैं, जिससे बड़ा नुकसान होता है। इस क्रोध का भी अंश तुम बच्चों में नहीं होना चाहिए। यह बहुत बड़ी व कड़ी परहेज है।

171. कभी भी कोई व्यर्थ वा शैतानी बाते सुनावे तो उसका मित्र नहीं बनो। हाँ जी करके ग्लानि की बातें सुनना माना बाप का ना-फरमानवरदार बनना।

172. तुम्हारी कथनी, रहनी और करनी सब एक हो, तभी दूसरों की सेवा कर सकेंगे।

173. आपस में हंसी-मज़ाक करके किसी को दु:खी कर देना या हंसी-मजाक में विकारों की बदबू हो....ऐसा पापी योगी नहीं हो सकते योगी बच्चे मुख से कभी कुवचन नहीं निकालेंगे, उनकी बुद्धि बड़ी शुद्ध रहती है। योगी की सब कर्मेन्द्रियां शीतल होती हैं, कोई भी चलायमानी है तो वो योगी नहीं।

174. योग में बैठे-बैठे अगर बुद्धि भटक जाती, कोई देहधारी याद आ जाता तो यह भी सूक्ष्म पाप है।

175. महारथी बच्चे हर समय अपनी जांच करते रहेंगे। उनमें कोई भी प्रकार का गन्द नहीं होगा।

176. तुम्हारा शरीर से रिंचक भी प्यार नहीं होना चाहिए, कभी दुनियावी फैशन नहीं करनी है। सभी मनुष्य फैशन में फंसे हुए है। अपनी देह को

ही टिप-टाप करते रहते हैं, ऐसा फैशन करते जो दूसरे आकर्षित हों....यह भी एक मुसीबत है। तुच्छ बुद्धि वाले देह की तरफ आकर्षित होते हैं, स्वच्छ बुद्धि वाले देह को देखते हुए नहीं देंखेंगे, एक बाप से प्यार करेंगे।

177. सबसे अच्छी मेहनत है....अपने नाम-रूप को भूल, आत्मा स्टार निश्चय कर बाप को स्टार रूप में याद करना।

178. तुम्हें अभी टॉकी से मूवी,मूवी से साइलेन्स में जाना है इसलिए बहुत धीरे और कम बोलने का अभ्यास करो।

179. अभी तुम मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ रहे हो, इसलिए दैवीगुणों पर बहुत अटेन्शन रखना है। तुम्हारा खान-पान बहुत सात्विक और साधारण होना चाहिए। जरा भी लालच न हो। बोल-चाल भी बहुत रॉयल चाहिए।

180. सच्चे वैष्णव वह है जो किसी को दु:ख नहीं देते, फालतू बातें सुनाकर किसी का सत्यानाश नहीं करते और खान-पान शुद्ध हैं।

181. सर्विसएबुल बच्चों में कोई भी छी-छी तमन्नाएं नहीं होनी चाहिए।

182. बाबा हरेक बच्चे को राय देते हैं....मीठे बच्चे, टाइम बहुत थोड़ा है इसलिए इस अमूल्य टाइम को वेस्ट मत करो। तुम कौड़ियों के पीछे समय नहीं गंवाओ।

183. इस पढ़ाई के लिए हरेक को पवित्रता की धारणा करनी है, बाप के समान पवित्रता का सागर बनना है। अन्त तक ब्रह्मचर्य में रहकर यह पढ़ाई पढ़नी है।

184. थोड़ी गर्मी हुई या ठण्डी पड़ी तो ऐसे नाजुक नहीं बनना है कि हमसे सहन नहीं होता। इस दुःखधाम में दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी, निन्दा-स्तुति सबमें समान रहना है। सर्विसएबुल बच्चे यह बहाना नहीं कर सकते कि बाबा यहां गर्मी है इसलिए हम सर्विस नहीं कर सकते। सर्दी-गर्मी सबमें धीरज रखना है।

185. हे शिव बाबा...कहना यह भी भक्ति मार्ग की आदत है। यह पुकार का शब्द है।

186. तुम्हें कभी भी मुरझाना नहीं है। चेहरे पर उदासी आना भी माया का वार है।

187. कभी किसी देहधारी से प्राइवेट पत्र-व्यवहार नहीं करना, पर्सनल लेन-देन नहीं करना। देहधारी से दिल लगाना....यह भी उल्टे कर्मों का खाता बन जाता है। इसलिए सदैव यह ध्यान रखो कि हमें प्राणों का प्यारा बाप मिला है, उसके सिवाए किसी को भी याद नहीं करना है। तुम्हारी आंख किसी में डूब नहीं सकती।

188. याद की यात्रा में रहने वाले अपना चार्ट अवश्य रखेंगे। ज्ञान की टिक-टिक करने वाले याद का चार्ट रख नहीं सकते। योगी बच्चों की चलन बड़ी रॉयल, शानदार होगी। योगी बच्चे यज्ञ की ह•ी-प्यार से सेवा करेंगे।

189. सर्विसएबुल बच्चों प्रति बाप का डायरेक्शन है.... मीठे बच्चे आराम हराम है, सर्विस पर भागते रहो। बादल आए रिफ्रेश हुए, फिर जाकर अनेकों को रिफ्रेश करना है।

190. सब बातें छोड़ तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करो, मुख्य बात कभी भी बाह्यात बातों में अपना टाइम वेस्ट न करो। तुम्हारा टाइम बहुत वैल्युएबुल है। तूफानों से भी डरना नहीं है, तकलीफें आयेंगी, घाटा पड़ेगा पारन्तु बाप की याद न भूले.... यही पुरुषार्थ करो।

191. पढ़ाई छोडने के तीन कारण हैं....किसी न किसी बात में संशय से, माया के तूफान सहन न कर सकने से, काम महाशत्रु के वश हार खा लेने से। अगर नशा रहे कि ऊंचे ते ऊंचा भगवान हमें टीचर बनकर पढ़ाने आया है, तो कभी भी पढ़ाई छोड़ नहीं सकते।

192. अतीन्द्रिय सुख में वही रह सकते जो ज्ञान-खज़ाने से भरपूर हैं। तुम्हारे में सबसे साहूकार वह जिसने ज्ञान को अपने जीवन में धारण ि◌कया है। अगर ज्ञान की धारणा नहीं होती तो गरीब हुए।

193. इस समय दुनिया में नंबरवन गंदा बनाने वाली चीज़ है...सिनेमा और टीवी। कइयों को बाइस्कोप देखने बिगर नींद नहीं आती। बाबा कहते अश्लील फिल्म देखने वाले विकारी बनने बिगर रह न सकें। तुम बच्चे ऐसी गन्दी फिल्में नहीं देख सकते।

194. अपने को देखो.... हमारी दृष्टि क्रिमिनल है! अगर अभी तक विकार की दृष्टि जाती तो समझो पूरे 84 जन्म नहीं होंगे। नर से नारायण नहीं बन सकेंगे। आंखे ही बहुत धोखा देती है, सारा मदार आंखों को सिविल बनाने के लिए बाप ने युक्ति बतलाई है कि बच्चे आत्मिक दृष्टि से देखो। देह को न देखो, मैं आत्मा हूँ... यह पक्का अभ्यास करो।

195. बाप का फरमान है बच्चे सवेरे-सवेरे उठकर स्नान आदि कर रिफ्रेश हो मुझे याद करो। जो टाइम पर नहीं उठते बाबा उन्हें कपूत बच्चा समझते। सपूत बच्चे महाराजा-महारानी बनेंगे, क्योंकि हर आज्ञा का पालन करते और कपूत बच्चे जरूर झाड़ू लगाएंगे।

196. मीठे बच्चे, तुम्हें देवता बनना है इसलिए माया के अवगुणों का त्याग करो, गुस्सा करना, बुरी दृष्टि से देखना, चोरी करना ये महान पाप हैं।

197. मीठे बच्चे, नाजुकपना भी देह-अभिमान है, रूठना, रोना यह सब आसुरी संस्कार तुम बच्चों मे नहीं होने चाहिए। दुःख-सुख, मान-अपमान सब सहन करना है।

198. सर्विस में ढीलापन आने का कारण है....आपस में एक-दो के अवगुण देखना। आपस में अनबनी होना, मतभेद होना भी देह-अभिमान है। मैं फलाने के साथ नहीं चल सकता, मैं यहाँ रह नहीं सकता....यह सब नाजुकपना है। बाबा कहते बच्चे आज्ञाकारी बनो, आर्डर हुआ तो फौरन हाजिर होना चाहिए। कोई भी बात में आनाकानी मत करो।

199. हृदय बहुत सरल हो, अन्दर में अनुमान व वहम का कूड़ा-किचड़ा नहीं होना चाहिए।

200. बुद्धि को सदा परचिन्तन से मुक्त रखो, न कभी किसका परचिन्तन सुनो और न वर्णन करो। सूक्ष्म में भी किसी का परचिन्तन सुनने का इन्ट्रेस्ट न हो, न किसकी निन्दा सुनो और न करो।

201. कोई किसी बात की शिक्षा देता तो उसे संभाल कर रख लो, फेंकते क्यों हो? अगर जरा भी चिन्तन चला, फीलिंग आयी....यह क्यों

बोला.....तो यह भी देह-अभिमान है। कभी अन्दर में यह संकल्प तक न आए कि इसने मेरी निन्दा की है, मैं भी इसका पोल खोल दूँ, निन्दा करूँ, बात बताऊँ.....यह भी वैर-भाव, बदले की भावना है। ऐसे ऐसे विचार व संकल्प सतोप्रधान नहीं बनने देंगे। निन्दा-स्तुति, मान-अपमान किसी भी बात का असर मेरे ऊपर न हो।

202. कभी भी मान-शान के भिखारी नहीं बनना है। अगर मान-शान-नाम के कारण सेवा करते तो जैसे ब्लैक मार्केट वाला धंधा हो गया। सच्ची कमाई में मान-शान की इच्छा के संकल्प मिक्स नहीं होने चाहिए। सूक्ष्म में यह संकल्प भी न आना चाहिए कि मेरा रिगार्ड ही क्या है! मेरा तो यहां कोई मान नहीं। अगर यह भी संकल्प है तो मैं स्वच्छ आत्मा नहीं, झूठ, कपट भरी हुई है। ईश्वर की सन्तान मान-शान के पीछे चलायमान हो, अगर न मिले तो रोता धोता रहे, तो क्या उसे ईश्वर का सच्चा बच्चा कहेंगे?

203. तुम बच्चों की स्थिति ऐसी हो जैसे कोई भी बात हुई ....स्वप्न, कुछ हुआ ही नहीं। नथिंग न्यू....शब्द भी न निकले। भक्ति में भी कहते हैं.....हे राम जी संसार बना ही नहीं, तो हमें किसी बीती हुई बात का चिन्तन नहीं करना है, जैसे कोई बात हुई ही नहीं। उसका चिन्तन करना पानी का मंथन करना है। वह भी टाइम वेस्ट है, व्यर्थ चिन्तन करने की आदत मन को थकाती है।

204. माया सूक्ष्म में मन्सा के अन्दर अनेक तूफान लाती है। आंखे बहुत धोखा देती है। किसी सुन्दर सूरत को देखते ही दृष्टि खराब हो जाती,

जबान चलायमान हो जाती। यह सब माया के तूफान हैं माया बड़ी प्रबल है इसलिए बाबा बच्चों को युक्ति बताते हैं....मीठे बच्चे रोज़ अपना पोतामेल रखो। अपने ऊपर अटेन्शन दो। निरन्तर आत्म-अभिमानी रहने का अभ्यास करो। भाई-भाई की दृष्टि पक्की करो। देह को देखते हुए भी आत्मा को देखो। अगर किसी को देख वृत्ति चलायमान होती तो उनसे दूर हट जाओ, खड़े होकर बात न करो। किनारा कर लो। अगर कभी कोई कर्मेन्द्रिय धोखा दे तो फौरन बाबा को बताओ, सच सुनाने से आदत मिटती जाएगी।

205. अखण्ड योगी बनने के लिए:-

- ❖ किसी के भी संगदोष में कभी भी नहीं आना है।
- ❖ दूसरों के अवगुणों को देखते हुए, सुनते हुए डोन्ट केयर करो।
- ❖ विकारी संग और विकारों से तुम्हें बहुत-बहुत दूर रहना चाहिए। भल शरीर निर्वाह अर्थ कर्म तो करना है, परन्तु शूद्रों के संग से बहुत संभाल रखनी हे। संगदोष में आकर कभी भी कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है।

206. सदा हर्षितमुख वह रह सकते जो बाप को सर्विस में पूरा-पूरा मददगार बनें। सदा श्रीमत पर उमंग-उत्साह में रहें, विश्व का कल्याणकारी बनें। बिलकुल निर-अहंकारी हो। कोई भी कड़ा स्वभाव, संस्कार न हो। सर्विस में जरा भी सुस्ती नहीं आनी चाहिए। अगर कोई ज्ञान सुनानेकी सर्विस नहीं कर सकते तो स्थूल सर्विस करनी चाहिए। आराम हराम हैं बहुत शान्तचित हो।

207. सपूत बच्चे बाप जैसे मीठे और लवली होंगे। जरा भी अहंकार नहीं होगा। वह सदैव सुखदाई होंगे। मुख से ज्ञान-रत्नों के सिवाए और कुछ भी नहीं बोलेंगे। अपने हर कर्म से माँ-बाप का शो करेंगे कभी भी सतगुरू की निन्दा नहीं कराएंगे। उनके अन्दर कोई भी अवगुण वा कडुवापन नहीं होगा। कोई भी बात अगर सामने आएगी भी तो उसे परीक्षा समझ शान्त रहेंगे। कभी आपस में लड़ेंगे नहीं।

208. सच्चे बाप के साथ सच्चे बनो, अपना पूरा चार्ट बाप के सामने रख झूठ बोलते हैं उनकी बाप रक्षा नहीं कर सकते, छिपाने से पापों की वृद्धि होती है, इसलिए बच्चों को साफ दिल रहना है।

209. मीठे बच्चे, शादी करने का तो कब ख्याल भी नहीं आना चाहिए। शादी की तो फिर शरीर से दिल लग जाएगी। बाप कहते इन पुरानी जुतियों से कुछ भी स्नेह न रखो। किसी के भी नाम-रूप में दिल न लगाओ।

210. प्रत्यक्ष पाप है....किसी को दु:ख देना, विकारों में जाना, छी छी खाना, शराब पीना आदि। अब तुम इन सब छी छी आदतों को समाप्त करो तो महान आत्मा बन जाएंगे।

211. बाबा कहते....हे मीठे ब्राह्मण बच्चों, प्रतिज्ञा करो आपस में कभी भी लड़ेंगे नहीं, रुहानी प्यार से रहेंगे। अगर कोई बच्चा लड़ता है तो लड़ना माना निधन का। लड़ना माना आसुरी सम्प्रदाय। वह बाप की इज़्जत गंवाता, निन्दा कराता, इसलिए ठौर न मिल सके। वह जाकर चाण्डाल का जन्म लेते, देह-अभिमान के कारण लूनपानी होते।

इसलिए तुम प्रेम के सागर के बच्चे प्रेम से भरपूर गंगा बनो, उल्टा-सुल्टा न बोलो। किसी से रफ-टफ बात करना भी आसुरी गुण है, तुम्हें बहुत प्यार से मीठा बोलना है। मीठा बनने का पुरुषार्थ करो तो अच्छे मार्क्स प्राप्त होंगे।

212. अभी तुम बच्चों में मांगने के संस्कार नहीं होने चाहिए। क्योंकि बाप ने तुम्हें संगम युग पर कामधेनु बनाया है। तुम बाप समान सब की मनोकामना पूर्ण करने वाले हो। तुम स्वयं के प्रति कोई आशा नहीं रख सकते।

213. पूरा सरेन्डर वह जिनकी बुद्धि में रहता कि हम ईश्वरीय माँ-बाप से पलते हैं। बाबा यह सब कुछ आपका है, आप हमारी पालना करते हो। भल कोई नौकरी आदि करते हैं लेकिन बुद्धि से समझते हैं यह सब बाबा के लिए हैं, बाबा को मदद करते रहते तो ऐसे बच्चे ही अर्पण बुद्धि हैं। वह शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते भी निरंतर बेहद के मात-पिता को याद करते हैं। ऊंच पद पाने के लिए अच्छी रीति पढ़ते और पढ़ाते हैं।

214. अपना मिजाज बहुत मीठा बनाओ, भूले चूके भी किसी को दु:ख मत दो, बुरे वचन कहना, क्रोध करना, डांटना यह सब दु:ख देना है।

215. स्वयं को अविनाशी ज्ञान रत्नों के खज़ाने से भरपूर कर अनेक आत्माओं को जीयदान देना ही मुख्य पुरुषार्थ है विजय माला में पिरोने का।

216. तुम ईश्वर की डायरेक्ट रचना हो, तुम्हारे में सदा हर्षित रहने की विशेषता अवश्य होनी चाहिए। ईश्वर की रचना के मुख से सदैव ज्ञान रत्न निकलते रहें। चलन बड़ी रॉयल चाहिए। बाप का नाम बदनाम करने वाली चलन न हो। रोना, झगड़ना उल्टा-सुल्टा खाना...यह ईश्वरीय सन्तान के लक्षण नहीं। ईश्वर की सन्तान कहलाने वाले अगर रोते हैं, कोई अकर्तव्य करते हैं तो बाप की इज्जत गंवाते हैं। इसलिए बहुत-बहुत संभाल करनी है। सदा ईश्वरीय नशे में हर्षितमुख रहना है।

217. मीठे बच्चे, अपने संस्कारों को सम्पूर्ण पावन बनाने के लिए... देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल अपने को आत्मा निश्चय करो। मैं आत्मा भाई-भाई हूँ यह पाठ पक्का करो।

218. आपस में व्यर्थ झरमुई झगमुई की बातें न करो, इससे वायुमण्डल खराब होता है। कोई की भी गलती देखो तो बाप को सुनाओ। इधर-उधर वर्णन न करो।

219. जैसे कर्म मैं करूँगा मुझे देख और भी करेंगे, इसलिए हर कर्म सोच-समझकर करो। पढ़ाई में कभी अलबेले मत बनो।

220. बच्चे, इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी न देखो, इस दुनिया में कोई भी चीज काम की नहीं, सबको आग लगनी है, इसलिए इससे ममत्व मिटा दो।

221. माया के धोखे से बचने के लिए इच्छा मात्रम् अविद्या बनना है। इस डर्टी दुनिया से दिल नहीं लगानी हैं, कोई भी आश नहीं रखनी है।

222. सबसे ऊँचा कैरेक्टर है.....पवित्रता। इसलिए पवित्रता का पूरा-पूरा सबूत देना है। अपने आपको सुधारने के लिए पवित्र जरूर बनना है।

223. इस जन्म के कोई भी कर्म बाप से छिपाने नहीं है, छिपाने से पापों की वृद्धि होती है, बाप से योग टूट जाता हैं। इसलिए सच्चे बाप से सदा सच्चे रहना हैं।

224. गुप्त ज्ञान का सिमरण कर सदा हर्षित रहना है। देवताओं के चित्रों को सामने देखते हुए उन्हें नमन वन्दन करने के बजाए उन जैसा बनने के लिए दैवीगुण धारण करने हैं।

225. मुख से सदा मधुर बोल बोलने हैं। ज्ञान रत्न ही सुनने और सुनाने हैं। मुख से कटुवचन अथवा कंकड़ नहीं निकालने हैं।

226. सर्विस में कभी भी थकना नहीं है, उम्मीद रख शौक से सर्विस करनी है। सदा हुल्लास में रहना है। कभी दिलशिकस्त नहीं होना है।

227. निन्दा-स्तुति, दु:ख-सुख, सर्दी-गर्मी में समान रहना है। अपनी स्थिति को एकरस बनाना है।

228. बच्चे, परचिन्तन पतन की जड़ है, आत्म-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है। इसलिए परचिन्तन छोड़ आत्म-चिन्तन करना है। व्यर्थ चिन्तन में समय बरबाद मत करो।

229. हियर नो इविल, सी नो इविल, टॉक नो इविल, जो बात तुम्हारे काम की नहीं वह सुनी-अनसुनी कर दो। अपनी स्थिति को खराब मत करो।

230. सतो प्रधान बनने के लिए जिन्न की तरह याद की सीढ़ी चढ़नी और उतरनी है। याद की यात्रा में कभी थकना नहीं है।

231. बच्चे, तुम्हें कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठाना है, यदि कोई से कोई भूल होती है या किसी में कोई खामी देखते हो तो बाप को रिपोर्ट करो। क्योंकि खामियाँ निकालने का कान्ट्रैक्ट बाप ने उठाया है, बच्चों का यह काम नहीं। इसलिए आपस में खामियों का वर्णन नहीं करना है।

232. कभी आपस में वा बाप से रूठकर पढ़ाई नहीं छोड़नी है। किसी से भी नाराज नहीं होना है। मुरली कभी भी मिस नहीं करनी है।

233. तुम्हें किसी की निंदा नहीं करनी है। निंदा करने से टाइम वेस्ट होता है। इससे तो प्यार से बाप को याद करो तो बहुत फायदा है निंदा हमारी जो करें मित्र हमारा सो...यह सदा स्मृति में रखो।

234. सूक्ष्मवतन वासी फरिश्ता बनने के लिए इस रुहानी सर्विस में दधीची ऋषि मिसल ह•ी-ह•ी स्वाहा करना है। यह यज्ञ तुम्हें मन-इच्छित फल देता है, इसलिए यज्ञ की प्यार से सेवा करनी है।

235. विनाश के पहले अपना पुराना बैग-बैगेज सब ट्रांसफर कर देना है भविष्य नई दुनिया के लिए सब कुछ इनश्योर कर देना है।

236. तुम बच्चों के मुख से कभी दु:ख के शब्द हे ईश्वर, हे भगवान वा हे बाबा नहीं निकलना चाहिए। तुम वाह बाबा, वाह ड्रामा, वाह के गीत गाते सदा हर्षित रहो।

237. बच्चे, तुम अब इस पुरानी दुनिया से जैसे मर चुके हो, यह मरजीवा जन्म है। इसलिए सफेद ड्रेस भी मौत को सिद्ध करती है।

238. तुम बच्चे अभी वनवाह में हो, तुम्हे यहाँ कोई भी फैशन नहीं करना है। बहुत साधारण रहना है।

239. लौकिक सम्बन्ध से तोड़ निभाना है। बड़ी युक्ति से चलना है। भाई-भाई की दृष्टि का अभ्यास कर विकारी दृष्टि को समाप्त करना है।

240. घर-गृहस्थ में रहते लोक संग्रह को भी देखना है, लौकिक सम्बन्ध में बहू को बहू, सासू को सासू ही कहेंगे। ज्ञान गुप्त हैं, सम्बन्ध भी गुप्त है। वह तुम ही जानते हो इसलिए मुख से पति को भाई, सासू को बहन नहीं कहना है, इससे भी डिस-सर्विस हो जाती है। एक दो को रिगार्ड देना है।

241. तुम्हें सब छी-छी आदतें मिटा देनी है। संग का रंग बहुत लगता है। संगदोष में आकर एक बार भी सिगरेट आदि पीने की टेस्ट लगी तो आदत पड़ जाएगी। इसलिए संग से सम्भाल करनी है।

242. कोई कैसी भी भयानक परिस्थिति सामने आ जाए उसे नथिंग न्यू समझ पार करना है। मूंझना वा घबराना नहीं है। कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी युग है....इस स्मृति से निडर रहना है।

243. बच्चे, क्लास में रोज जाने से नई-नई प्वाइंट्स मिलती हैं परन्तु बहुत बरसात है, कर्फ्यू आदि लगता है, तुम नहीं जा सकते हो तो घर में रहते भी अल्फ और बे को याद करो। बन्धन है तो भी घर बैठे बाप को याद करते रहो।

244. तुम्हें सबके प्रति शुभ भावना रखनी है, रहम दिल बन अपने हमजिन्स का भी कल्याण करना है। एक दो को सच्चा मान देना है।

245. सदा यह स्मृति रखो कि हम एकमत, एक धर्म, एक राज्य की स्थापना के निमित्त हैं इसलिए हमे एक होकर रहना हैं कभी भी मतभेद में नही आना है। आपस में पार्टियाँ नहीं बनानी है।

246. तुम्हें किसी से भी दुश्मनी नहीं रखनी है, तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन रावण है जिस पर विजयी बनना है।

247. तुम्हारा दिलवाला एक बाप है, इसलिए दिल की बातें एक बाप को सुनानी हैं, किसी देहधारी को नहीं। एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है।

248. सदा फालो फादर कर मन्सा, वाचा, कर्मणा एक्यूरेट बनना है। शूद्रों के संग में आकर अपने ब्राह्मण कुल को भूलना नहीं है। कभी भी कुल-कलंकित नहीं बनना है।

249. हर कर्म, कर्मयोगी बनकर करना हे। 8घण्टा शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करो, परन्तु कम से कम 8 घण्टा बाप को याद करना है।

250. ज्ञान रत्नों का दुकान खोलकर सच्ची कमाई करनी और करानी है। इसी मे अपना समय सफल करना है। एक बाप से सच्चा अविनाशी व्यापार करना है।

251. पैसे हैं तो 3 पैर पृथ्वी लेकर सेन्टर खोल दो। अपने लिए भी भल मकान बनाओ, आराम से रहो। साथ- साथ जैसे भक्ति में धर्माऊ निकालते थे ऐसे अब डायरेक्ट बाप की सर्विस में अपना सब कुछ सफल कर लो।

252. कोई कितने भी सितम करे, हंगामा करे, परन्तु तुम्हें पवित्र जरूर रहना है। किसी बात से डरना नहीं है। समस्याओं से निर्भय होकर सामना करना है। गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान रहना है।

253. बच्चे शादी बर्बादी है....परन्तु कोई बच्ची ज्ञान में नहीं चलती तो उसे उस दुनिया में जाने दो। बाकी बच्चा अगर बाप की राय नहीं मानता तो खुद कमाई कर अपना परिवार बसाए। तुम्हें नष्टोमोहा बनना है।

254. अगर सगाई करने के बाद ज्ञान मिलता है, शादी करनी ही पड़ती है तो महावीर बन दिखाना है, दोनों साथ में रहते बाल ब्रह्मचारी हो रहना है। मंजिल भल ऊंची है परन्तु प्राप्ति बहुत जबरदस्त है।

255. शिव बाबा को अपना सच्चा वारिस बनाओ, जो कुछ तुम्हारे पास है वह उनको दे दो तो वह 21जन्मों के लिए तुम्हारे पर बलिहार जाएगा।

256. तुम बच्चों को सबका रिगार्ड रखना है। बात करने का भी ढंग सीखना हैं पहले आप कह बात करनी है। छोटे हो या बड़े सब को रिगार्ड देना अपना फर्ज है।

257. यज्ञ की स्थूल सेवा में हि•याँ देना, प्यार से भोजन बनाकर खिलाना यह भी सब्जेक्ट है, इसकी भी मार्क्स मिलती है। परन्तु मुख से ज्ञान रत्न भी जरूर निकालने हैं।

258. मोस्ट स्वीटेस्ट झाड़ का अभी कलम लग रहा है, इसलिए बहुत-बहुत स्वीट बनना है। जैसे देवताएं स्वीट हैं, ऐसा स्वीट होकर रहना है।

259. इस बेहद नाटक में आत्म-अभिमानी बन हीरो पार्ट बजाना है। किसी के पार्ट से तुम्हें रीस नहीं करनी है। पुरुषार्थ में रेस करो, रीस नहीं।

260. हरेक का निश्चित पार्ट को जान सदा निश्चिन्त रहना हैं बनी बनाई बन रही ड्रामा पर अडोल रहना है।

261. सर्विस के हुल्लास में रहना है। दिल व जान से सर्विस करनी है सर्विस के लिए कभी बहाना नहीं बनाना है। सदा ईश्वरीय खिदमत में तत्पर रहना है।

262. बाप का बनकर किसी भी परिस्थिति में क्रोध नहीं करना है। क्रोध भी बहुत बड़ा भूत है, इस पर विजय प्राप्त करनी है। मन्सा द्वारा भी किसी को दु:ख नहीं देना है। इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में विघ्न रूप नहीं बनना हैं।

263. किसी के दिल को रंज (नाराज) नहीं करना है, मुख से सदैव रत्न निकालने है। बहुत रॉयल्टी से व्यवहार करना है।

264. तुम बच्चों को रूप-बसन्त बनकर रहना है। आप समान बनाने की सेवा भी करनी है और बाप को भी याद करना है।

265. हमेशा अच्छे सर्विसएबुल स्टूडेन्ट का संग करना है, अगर कोई ज्ञान, योग के सिवाए उल्टी-सुल्टी बात करे, मुख से रत्न के सिवाए पत्थर निकाले, या किसी की ग्लानि सुनाए तो उसके संग से अपनी सम्भाल करनी है, सावधान रहना है।

266. किसी देहधारी के नाम- रूप को याद नहीं करना है। नाम- रूप की बीमारी माया रूपी चूहे की जाल है, इस जाल में कभी फंसना नहीं है।

267. आपस में क्षीरखण्ड होकर रहना है, कभी भी लून-पानी हो डिस सर्विस नहीं करनी है।

268. जैसे बाप और दादा दोनों ही निर-अहंकारी है किसी भी प्रकार का अहंकार नहीं। बहुत साधारण रहते हैं। कहते हैं मैं तुम बच्चों का ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। ऐसे तुम बच्चों को भी निर-अहंकारी हो रहना है। किसी से भी सेवा नहीं लेनी है।

269. बच्चे देह अभिमान में आने से बाकी सब विकार आ जाते हैं। लड़ना, झगड़ना, नवाबी चलाना, यह सब देह- अभिमान है। तुम बच्चों को देही अभिमानी बनना है। कोई भी चीज़ में आसक्ति नहीं रखनी है। अच्छा पहनूँ, अच्छा खाऊँ....यह सब इच्छाएं समाप्त कर देनी हैं।

270. माया को दोष न देकर अपनी कमियों की सूक्ष्म में जाँच कर उन्हें निकालना है। अन्दर सूक्ष्म में भी काम का नशा न हो। काम महाशत्रु है। इस पर जीत पाने से ही जगतजीत बनेंगे।

271. बाप से अन्दर बाहर साफ रहना है। दिल साफ तो मुराद हासिल। ईश्वरीय परिवार से भी सच्चा लव रखना है।

272. सुनी-सुनाई बातों पर कभी भी विश्वास नहीं करना है। उल्टी बात कोई सुनाए तो एक कान से सुन, दूसरे से निकाल देना है। बुद्धि पर मनमत वा परमत का प्रभाव नहीं होना चाहिए।

273. पढ़ाई सोर्स आफ इनकम है, इसी पढ़ाई से मनुष्य से देवता बनते हो, इसलिए जब तक जीना है तब तक पढ़ाई पढ़नी है। अन्त तक सीखना है। मिया मिट्ठू बन अपने को बहुत समझदार नहीं समझना है।

274. सर्जन से कदम-कदम पर राय लेनी है। कोई भी अन्दर की बीमारी है तो बाप को सच-सच सुनाना है। कोई भी भूल हो तो बाप से क्षमा मांगनी है। दुबारा न करने की प्रतिज्ञा करनी है।

275. रोज कोई न कोई पुण्य का काम जरूर करना है। सबसे बड़ा पुण्य है....किसी को बाप का सही परिचय देना और सबको बाप की याद दिलाना।

276. किसी भी बात की डिबेट में अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है। तुम्हें शास्त्रवादियों से भी शास्त्रों पर वाद-विवाद नहीं करना है।

277. अब घर जाना है, इसलिए पुराने जगत से बुद्धि का नाता तोड़ उपराम रहना है। पुराने सब हिसाब किताब योगबल से चुक्तू करने है। नया हिसाब किताब किसी से भी नहीं बनाना है।

278. रुहानी खुशबूदार फूल बनना है। अन्दर में जो अवगुण रूपी कांटे हैं, वह निकाल देने हैं। किसी को भी कांटा नहीं लगाना है।

279. सत्य बाप जो कुछ सुना रहे हैं, उसे आँख बन्द करके मानने में ही अपना कल्याण है। इसलिए किसी भी बात में संशय नहीं उठाना है। कभी मूंझना नहीं है।

280. बीमारी में एक बाप को याद करना है, शरीर में ममत्व नहीं रखना है। खुशी-खुशी से कर्मभोग समझ पुराना हिसाब किताब चुक्तू करना है। हाय-हाय नहीं करनी है।

281. मनुष्य से देवता बनना है इसलिए अपना खान-पान बड़ा शुद्ध रखना है। अशुद्धि को त्याग सच्चा वैष्णव बनना है।

282. बाप द्वारा जो सुख शान्ति-पवित्रता का वक्खर (सामान) मिला है, वह सबको दान देना है। दान देने में मनहूस नहीं बनना है। पहले बाप के आगे विकारों का दान दो फिर अविनाशी ज्ञान धन का दान करो।

283. यह ईश्वरीय जन्म अमूल्य, हीरे तुल्य है। इसी जीवन में आत्मा और शरीर दोनों को ही पावन बनाना है, इसलिए इससे कभी तंग नहीं होना है। इसकी सम्भाल करनी है। बाकी ममत्व नहीं रखना है।

284. रुहानी सोशल वर्कर बन सच्ची सेवा करनी है। सबको रुहानी यात्रा करानी है।

285. तुम बच्चों को डबल अहिंसक बनना है। न काम कटारी चलानी है, न क्रोध के वश हो किसी को दुख देना है। क्रोध करना भी बहुत बड़ी हिंसा है।

286. भोजन सदैव बाप की याद में दृष्टि देकर खाना हैं भोजन करते समय आपस में बात नहीं करनी है। दफ्तर में भी टाइम मिलता हैं तो अशरीरी बनने का अभ्यास करना है।

287. तुम स्प्रीचुअल लाइट हाउस हो, तुम्हें सबको घर का रास्ता बताना है। तुम्हारी बुद्धि में सदा स्वदर्शन चक्र फिरता रहे। चेहरा सदा खुश रहे।

288. तुम पैदल करने जाते तो साइलेन्स में बाप की याद में जाना है। यही रेस करनी है। जैसे पादरी लोग साइलेन्स में जाते हैं ऐसे तुम्हें साइलेन्स में रहना है।

289. यह समय बहुत नाजुक है इसलिए कोई भी उल्टा कर्म नहीं करना है। कर्म-अकर्म-विकर्म की गति को ध्यान में रख सदा श्रेष्ठ कर्म ही करने हैं।

290. ड्रामा में पूरा विश्वास रख बेफिकर रहना है। कोई का शरीर भी छूट जाए तो भी तुम्हें आंसू नहीं बहाने हैं। आत्मा एक चोला बदल दूसरे पार्ट में गयी, इसलिए रोना नहीं है।

291. सर्व सम्बन्धों की सैक्रिन एक बाप हैं वही सर्व सम्बन्धों का लव देता है, इसलिए देहधारियों से दिल की प्रीत नहीं रखनी है। सर्व सम्बन्ध एक बाप से जोड़ने हैं। मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई....यह पाठ पक्का रखना है।

292. याद का चार्ट रखना है, जितना-जितना याद की टेव पड़ती जाएगी उतना विकर्म विनाश हो जाएंगे। कर्मातीत अवस्था समीप आती जाएगी।

293. बच्चे माया के तूफान बहुत आएंगे, संकल्प विकल्पों में हैरान करेगी, यह बहुत बड़ी बाक्सिंग है परन्तु तुम्हें हार नहीं खानी है। कर्म-इन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना है। योग से कर्मेन्द्रियों को शीतल बनाना हैं।

294. हरेक को अपना तन-मन-धन भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा में सफल करना है। जितना जो करेगा उतना ऊँच पद पाएगा।

295. तुम्हें कम्प्लीट फिलेंथ्रोपिस्ट बनना है। जैसे ब्रह्मा बाप ने महादानी बन अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया, ऐसे ही फालो फादर करना है।

296. बाप से कभी भी आशीर्वाद या कृपा नहीं मांगनी है। अपने पुरुषार्थ से अपने को आपे ही राजतिलक देना है। स्वयं को स्वयं ही लायक बनाना है।

297. तुम्हें सच्ची कथा सुननी और सुनानी है, रुहानी सर्विस की हॉबी रखनी है। सर्विस में अपने को बिजी रखना है।

298. ड्रामा की नालेज तुम्हें अचल, अडोल बनाने के लिए मिली है। पुरुषार्थ में ड्रामा कह खड़े नहीं होना है। पुरुषार्थ जरूर करना है। ऐसे नहीं ड्रामा में होगा तो कर लेंगे।

299. तुम व्यास के बच्चे सच्चे-सच्चे सुखदेव हो। तुम्हें सबको सुख देना है। सच्ची कथा सुनानी है। फिर धारणा करना है। सिर्फ पण्डित नहीं बनना है।

300. तुम्हें दान भी सोच समझकर करना है, पैसे की लेन-देन पाप आत्माओं से नहीं करनी है। किसी को पैसा दिया और उसने जाकर शराब पियाकोई बुरा काम किया तो उसका पाप भी तुम्हारे ऊपर आ जाएगा। इसलिए शिव बाबा तुम्हारा बड़े से बड़ा बैंकर है उसे दो मुट्ठी कखपन से महल मिल जाएंगे।

301. अन्तर्मुखी बन रुहानी रॉयल्टी में रहना है। अपने ख्यालात बड़े रॉयल रखने हैं। पुरानी दुनिया की व्यर्थ बातों में बुद्धि नहीं लगानी है। अनेकों का कल्याण करने के लिए रॉयल युनिवर्सिटी खोलना है।

302. हरेक से सदैव गुणग्रहण कर गुणवान बनना है,., सबके गुण रूपी मोती उठाने हैं। गुणग्राही बन अवगुण रूपी पत्थर नहीं उठाने हैं।

303. बेगर टू प्रिन्स बनने के लिए अपनी देह से भी बेगर बनना है। ट्रस्टी बन सब कुछ सम्भालना है।

304. एक बाप पर पूरा डिपेन्ड रहना है। इन्डिपेन्डेन्ट रहने के संस्कार समाप्त करना है। सच्चा-सच्चा पिताव्रता बनना है।

305. कुटुम्ब-परिवार में रहते बहुत कायदे अनुसार चलना है। बड़ों के साथ प्यार से रहना है। मुख से ऐसे फर्स्ट क्लास मीठे बोल निकालने हैं जो सब खुश हो जाएं। मित्र-सम्बन्धियों से बहुत ही नम्रता से, प्रेम भाव से मुस्कराते हुए बात करनी है। इसका ही प्रभाव पड़ेगा।

306. बच्चे, सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालनी है।भक्त भी सवेरे उठकर भक्ति करते हैं। तुम बच्चे अमृतवेले उठ ज्ञान का सिमरण करो। बाप से मीठी-मीठी बातें करो। सवेरे अजपाजाप करने से सारा दिन खुशी रहेगी।

307. बच्चे तुम्हारी नज़र किसी के शरीर पर नहीं जानी चाहिए। अपने को आत्मा समझ आत्मा से बात करो। आत्म-अभिमानी बनो। तुम्हें किसी का फोटो भी नहीं रखना है।

308. पढ़ाई और दैवीगुणों पर पूरा-पूरा ध्यान देना है। किसी से गुस्से में आकर बात नहीं करनी है। अगर किसी में क्रोध का भूत प्रवेश है तो उसके सामने से हट जाओ। ध्यान रहे कि कहीं हमारे में वह भूत प्रवेश न हो जाए।

309. राजाई पद लेने के लिए अपनी रहनी-करनी, चाल-चलन ठीक रखनी है। कथनी और करनी समान बनानी है।

310. किसी पर भी बुरी, विकारी दृष्टि रखना बड़े से बड़ा पाप है। इसलिए पोतामेल देखना है कि सारे दिन में ऐसा कोई पाप तो नहीं होता है।

311. तुम्हें एक-दो को प्राइवेट चिट्ठियाँ नहीं लिखनी है। इससे भी देहधारियों से प्रीत हो जाती है। उल्टे कर्मों का खाता भी बन जाता है।

312. मीठे बच्चे, वाचा अधिक नहीं चलाओ। जहाँ तक हो सके चुप रहो। कम बोलो और धीरे बोलो। चुप रहने में बहुत कमाई है।

313. बच्चे तुम्हें कभी भी जोर से खिल-खिलकर हंसना नहीं है। यह भी एक विकार है। तुम सदा देवताओं जैसा मुस्कराते रहो।

314. तुम्हारा कोई कितना भी प्यारा सम्बन्धी हो, लेकिन उसमे मोह की रग नहीं जानी चाहिए, नष्टोमोहा बनना है। अपने ऊपर तथा दूसरों पर रहम करना है।

315. तुम्हें कभी उदास नहीं होना है। उदास होना माना माया का दास बनना। जब उदासी आए तो अच्छे-अच्छे ज्ञानयुक्त गीत सुनो तो रिफ्रेश हो जाएंगे।

316. बच्चे, पढ़ाई में सदा चुस्त रहो। सुस्ती में आकर बहाना मत दो। पढ़ाई में बहुत कमाई है इसके लिए तो 6-8 मील से भी भाग-भागकर आना चाहिए। सुस्ती भी बहुत बुरा विकार है जो कमाई में विघ्न डालता है।

317. तुम्हें पहले अपने घर को सुधारना है, चैरिटी बिगन्स एट होम। फिर दूसरों को सुधारने का पुरुषार्थ करना है। घर का वातावरण ऐसा बनाकर रखो तो लगे कि सचमुच यहाँ तो स्वर्ग लगा है।

318. बच्चे बाइस्कोप जैसे हेल है, वहाँ जाने से बुद्धि चट हो जाती है। इसलिए तुम्हें गन्दे बाइस्कोप नहीं देखने है। व्यर्थ का संसार समाचार नहीं सुनना है। गन्दे किताब नहीं पढ़ने है।

319. तुम्हारी सच्ची गीता यह बैज है, यह बैज तुम्हें हमेशा लगा होना चाहिए। इस पर रचयिता और रचना का सारा ज्ञान दे सकते हो।

320. बच्चे एकान्तप्रिय बनो, घूमने फिरने जाते हो तो एकान्त में बैठ सच्चे माशूक को याद करो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो।

321. ध्यान दीदार की आश तुम्हें नही रखनी है। इसमें भी कब-कब माया की प्रवेशता हो जाती है। फिर कहते है फलाने में मम्मा आती, फलाने में बाबा आते। यह सब बातें छोड़ बाप का फरमान हैं मुझे याद करो। शिव बाबा का तन मुकरर है, इसलिए एक से ही सुनो। बाकी सब बातें छोड़ दो।

322. तुम्हें किसी से भी नफरत वा घृणा नहीं करनी है। किसी का भी तिरस्कार नहीं करना है। सबको एक बाप का परिचय दो....यह है नम्बर वन प्यार।

323. बुद्धि सब हदों से निकाल बेहद में रखनी है। मेरा-मेरा छोड़ जगत का कल्याण करना है।

324. चोरी करना, झूठ बोलना, बात को बदल देना, या छिपा लेना ये सब बुरी आदतें हैं, जो देह अभिमान के कारण आती हैं। इन सब आदतों को मिटाना है। आवाज से बोलने की आदत भी बदलना है।

325. यज्ञ के प्रति सदा आनेस्ट रहो। यज्ञ की एक-एक पाई तुम्हें सफल करनी है। ऑलराउन्डर बन यज्ञ में हर प्रकार की सेवा करनी है।

326. दान का बहुत महत्व है। दान की हुई चीज़ में ममत्व नहीं रखना है। दान करके फिर वापस माँगना यह भी पाप बनता है। दान करके वापस लेने का संकल्प आया तो उसका रिटर्न मिल नहीं सकता और भी बोझ चढ़ जाता है।

327. किसी को भी एक राम की बातों के सिवाए दूसरी कोई बातें नहीं सुनानी है। एक की बात दूसरों को सुनाना, परचिन्तन करना....यह धूतीपना है। इसे छोड़ देना है।

328. अपना स्वभाव बाप समान इज़ी बनाना है, कोई भी घमण्ड नहीं रखना है। बुद्धि को ज्ञानयुक्त बनाना है। अभिमान वाली बुद्धि न हो। भाव-स्वभाव में नहीं आना है।

329. आपस में संगठन बनाकर सर्विस करनी है, सहनशीलता का गुण धारण करना है। अपने आप से बात कर अपने को उमंग में लाना है। सदा साक्षी रहने का अभ्यास करना है।

330. तुम रॉयल बाप के रॉयल बच्चे हो, तुम्हारी आँख किसी में भी नहीं डूबनी चाहिए। तुम्हें किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना है। माँगने से मरना भला।

331. दूसरों का चिन्तन छोड़ स्वयं ऊँच पद पाने का पुरुषार्थ करना है। किसी की भी व्यर्थ बातें सुनकर अपना माथा खराब नहीं करना है। विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ करना है।

332. सदा हाँ जी, हाँ जी का पाठ पक्का करना है। ना कह नास्तिक नहीं बनना है।

333. सदा रिफ्रेश रहने के लिए दिन में कम से कम दो बार ज्ञान स्नान जरूर करना है।

334. यह इन्द्रसभा है, यहाँ तुम सब पुखराज परियाँ, नीलम परियाँ ज्ञान डांस करती हो, इस इन्द्र सभा में किसी भी विकारी पतित को लेकर नहीं आना है। नहीं तो श्रापित हो जाएंगे।

335. तुम्हें सच्ची गीता सुननी और सुनानी है। सच्ची राखी बाँध पवित्र बनना है।

336. मुरली सुनते ज्ञान डांस करनी है। आत्म-अभिमानी होकर मुरली सुनना है। बुद्धि इधर उधर न भटके, इसका ध्यान रखना है। क्लास में सुस्ती नहीं फैलानी है।

337. तुम्हें ज्ञान अमृत पीना और पिलाना है। तुम सच्चे ब्राह्मण हो, तुम्हें पवित्रता का हथियाला बाँधना है। पतित बनने का हथियाला कैन्सिल करना है।

338. पुराने कर्मों के खाते का जो चौपड़ा है, उसे अब समाप्त करना है। कर्मेन्द्रियों से अब कोई पाप कर्म नहीं करना है।

339. अशरीरी बनने का ऐसा अभ्यास हो जो अन्त मति सो गति हो जाए। अन्त में एक बाप के सिवाए दूसरा कोई भी याद न आए।

340. पढ़ाई के लिए अमृतवेले का समय फर्स्ट क्लास है। अगर लाचारी हालत में सवेरे क्लास में नहीं आ सकते तो शाम के समय भी मुरली पढ़नी वा सुननी है।

341. मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई मे पास होने के लिए निश्चयबुद्धि बनने का साहस रखना है। कभी किसी बात में संशय नहीं उठाना है।

342. आँखों को सिविल बनाने के लिए आत्मिक दृष्टि से देखना है, देह को देखते हुए भी न देखो। मैं आत्मा हूँ, यह अभ्यास पक्का करना है।

343. तुम सबकी अब वानप्रस्थ अवस्था है। वाणी से परे निर्वाणधाम जाना है, इसलिए देह और देह के सम्बन्धों से किनारा कर बाप को याद करो।

344. तुम सारी दुनिया के सच्चे सच्चे मित्र हो, तुम्हें किसी से भी शत्रुता नहीं रखनी है। तुम्हारे पास कोई लौकिक मित्र सम्बन्धी आदि आएं तो उन्हें भी बाप का परिचय दो।

345. जब तुम बच्चे ट्रेन में आते-जाते हो तो उस समय सर्विस का बहुत अच्छा चांस है। क्योंकि सब फ्री होते हैं। तुम सबको ईश्वरीय पैगाम सुना सकते हो। बैज पर भी सर्विस कर सकते हो।

346. बाप की सर्विस में पूरा-पूरा मददगार बनना है। कभी भी आपस में रूठकर या मूड ऑफ करके सर्विस नहीं छोड़नी है। सर्विस में विघ्न रूप नहीं बनना है।

347. बाप ने ज्ञान का कलश माताओं पर रखा है, इसलिए माताओं को रिगार्ड दे हमेशा आगे रखना है। माताओं का मर्तबा ऊँचा करना है। माता को ही गुरु कहा जाता है।

348. कभी भी लौकिक बच्चों आदि से तंग नहीं होना है। अगर बच्चा चंचलता करता तो क्रोध में आकर थप्पड़ आदि नहीं लगाना है। छोटे बच्चे हैं तो सुधारने के लिए रस्सी से बाँध दो, खाना आदि न दो। बाकी हाथ नहीं चलाना है।

349. तुम्हें किसी से भी कर्जा नहीं लेना है। कर्ज को भी मर्ज कहा जाता है। थोड़े पैसे से भी काम चल सकता है। दो रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ। फालतू खर्च नहीं करने हैं।

350. हरेक को अपना लौकिक काम तो करना ही है, समझो पुलिस की नौकरी है, आँख दिखानी पड़ती है तो युक्ति से आँख दिखाओ। जितना हो सके प्रेम से काम लो। हाथ नहीं चलाओ।

351. अगर पवित्रता के कारण अत्याचार होते हैं, अबलाओं पर मार पड़ती है तो थोड़ा सहन करना, बहुत प्यार से और नम्रता से समझाना है। अगर वह क्रोध करे तो तुम्हें फूलों की वर्षा करनी है।

352. और सब हद के नशों को छोड़ एक नारायणी नशे में रहना है। दूसरे, सब नशों में है नुकसान सिवाए नारायणी नशे के।

353. बच्चे तुम चैतन्य लाइट हाउस हो, तुम्हारी एक आँख में मुक्ति और दूसरी आँख में जीवन्मुक्ति। तुम सबको शान्तिधाम और सुखधाम का

रास्ता बताओ। तुम टिवाटे पर हो तुम्हें दु:खधाम भूल शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना है।

354. बच्चे तुम्हें पेट को भी पट्टी बांध भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है। तुम्हें इस दुनिया की किसी भी बात में रीस नहीं करनी है।

355. बच्चे अभी तुम पियरघर में हो, तुम्हें यहाँ जेवर आदि नहीं पहनने है। बहुत सादा रहना है। ससुरघर में जाकर श्रृंगार करना यहाँ नहीं।

356. बच्चे कभी किसको तंग नहीं करना है, न तंग होना है।

357. बच्चे तुम बच्चों को आज्ञाकारी बनना है। किसी भी बात में आनाकानी नहीं करनी है। नाजुक नहीं बनना है। मैं इनके साथ नहीं चल सकती, मैं यहाँ नहीं रह सकती....यह नाजुकपना है जो छोड़ देना है। रूसना, रोना आसुरी स्वभाव हैं जो तुम बच्चों में नहीं होना चाहिए।

358. हर एक के पार्ट को जानते हुए अपनी स्थिति सदा एकरस और मोहजीत बनानी है। सदा सन्तुष्ट रहना है, और सबको सन्तुष्ट करना है।

359. तुम्हें कौड़ियों पिछाड़ी अपना समय वेस्ट नहीं करना है। तुम हीरा बनने वाले हो, तुम्हें यह रुहानी धन्धा करना है।

360. यह नालेज पात्र को देना है। अगर कोई आरग्यू करता है, कहता है यह तो तुम्हारी कल्पना है तो तुम्हें अपना वैल्युबुल टाइम वेस्ट नहीं करना है। उसे प्यार और नम्रता से समझाकर रवाना कर देना है।

361. तुम्हें पियरघर, ससुरघर दोनों का कल्याण करना है, ऐसी चलन न हो जो वह कहें कि यह तो हमसे बात ही नहीं करते। मुख मोड़ लिया है। सबको रास्ता बताना है। सबसे जोड़ना है।

362. बच्चे किसी पार्टी आदि में जाना पड़ता हैं तो भले जाओ, राजी करो। लेकिन उनके हाथ का तुम्हें नहीं खाना है। तुम अपने को बचाने के लिए आपे ही युक्ति रचो। क्योंकि अन्न का मन पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

363. तुम्हें एक दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। कोई भी बेकायदे चलन नहीं चलनी है। नम्र बनकर रहना है।

364. बच्चे, तुम्हारे सेन्टर्स का दरवाजा हमेशा खुला रहना चाहिए। कोई भी तुम्हारे दर से खाली न जाए।

365. तुम्हें नींद को जीतने वाला बनना है। रात-रात को जागकर सच्ची कमाई करनी है।

366. देही-अभिमानी बच्चों का पढ़ाई और बाप से अटूट प्यार होता है, बड़े शीतल होते हैं। अधिक बात नहीं करते हैं। चलन बड़ी रॉयल होगी। वह सुखदायी होने कारण सबके प्यारे होंगे। उनका बोल-चाल बड़ा मीठा, सुन्दर होगा। सब कुछ देखते हुए कुछ भी न देखने का पुरुषार्थ करो, तभी अवस्था अच्छी बन सकती है। ऐसा अभ्यास करने वाले बच्चे ही ऊँच पद प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए उपराम बनो।

367. ''सदा अपने को चलते-फिरते लाइट के कार्ब के अन्दर आकारी फरिश्ते के रूप में अनुभव करते हो? जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ते

के रूप में चारों ओर की सेवा के निमित्त बने हैं ऐसे बाप समान स्वयं को भी लाइट स्वरूप आत्मा और लाइट के आकारी स्वरूप फरिश्ते स्वरूप में अनुभव करते हो? बापदादा दोनों के समान बनना है जिससे स्नेह होता है तो जैसे वह बोलेगा वैसे ही बोलेगा, स्नेह अर्थात् संस्कार मिलाना, और संस्कार मिलन के आधार पर स्नेह भी होता। संस्कार नहीं मिलता तो कितना भी स्नेही बनाने की कोशिश करो, नहीं बनेगा। तो दोनों बाप के स्नेही हो? बाप समान बनना अर्थात् लाइट रूप आत्मा स्वरूप में स्थित होना और दादा समान बनना अर्थात् फरिश्ता। फरिश्ता बनके चलते हो कि पांच तत्वों से अर्थात् मिट्टी से बनी हुई देह अर्थात् धरनी अपने तरफ आकर्षित करती? जब आकारी हो जाऐंगे तो यह देह (धरनी) आकर्षित नहीं करेगी।''

ओम शान्ति